सृजन मञ्जूषा

(द्विमासिक पत्रिका)

वर्ष-३ अंक-१३ Title Code - CHHMUL00048 वि.सं. २०८२ जुलाई-अगस्त २०२५

स्व का बोध विशेषांक

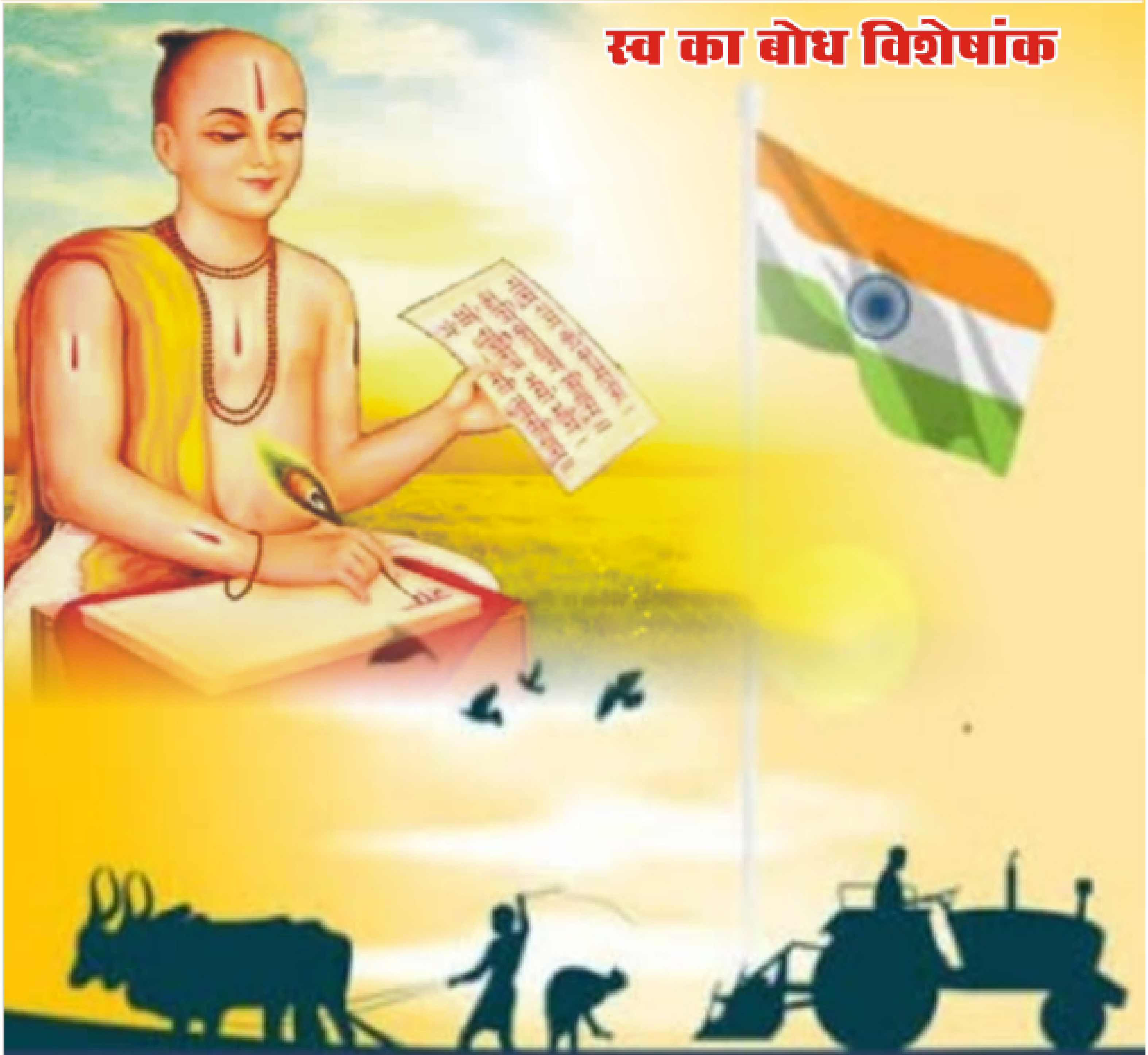

प्रकाशक :

सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़

आयुर्वेदिक कालेज के पीछे, सरस्वती विहार, रायपुर - ४९२०१० (छ.ग.)

औद्योगिक नीति
अब और अधिक रोजगारपरक, व्यापक
और उद्यमों के लिए लाभकारी
श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़
श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री
स्थानीय युवाओं को रोजगार देने वाले उद्योगों को विशेष अनुदान
आधुनिक खेती से लेकर खिलौना उद्योग तक को मिलेगा बढ़ावा
वस्त्र क्षेत्र में निवेश पर अब 200 फीसदी तक का प्रोत्साहन
ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर, रक्षा और एयरोस्पेस सेक्टर को विशेष पैकेज
पर्यटन और होटल व्यवसाय को बढ़ावा
नीति में संशोधन से युवाओं, किसानों, उद्यमियों और निवेशकों को सीधा लाभ
RO No. - 13208/2
विष्णु के सुशासन से संवर रहा छत्तीसगढ़
Visit us : ChhattisgarhCMO DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in

सृजन मञ्जूषा

स्व का बोध विशेषांक
(द्विमासिक पत्रिका)

वर्ष - ३ अंक -१३ Title Code - CHHMUL00048 विक्रम संवत् २०८२ जुलाई-अगस्त २०२५

संरक्षक
श्री सत्यनारायण अग्रवाल
(वरिष्ठ सदस्य, विद्या भारती मध्य क्षेत्र)
श्री अखिलेश मिश्र
संगठन मंत्री
(विद्या भारती मध्य क्षेत्र)
श्री रामभरोसा सोनी
(अध्यक्ष, सरस्वती शिक्षा संस्थान (छ.ग.)
श्री लक्ष्मण राव मगर
(प्रादेशिक सचिव, सरस्वती शिक्षा संस्थान छ.ग.)
परामर्शदाता
डॉ. देवनारायण साहू
(संगठन मंत्री, सरस्वती शिक्षा संस्थान छ.ग.)
संपादक
उदय रावले
संपादक मंडल
अशोक कुमार देवांगन
शिरीष दाते

कम्पोजिंग - कौशल साहू, मो.9753211816
मुद्रक - स्वास्तिक प्रिंटरी, पंचमुखी हनुमान मंदिर रोड, पवार सभा भवन के पास न्यू चंगोराभाठा, रायपुर, मो. - 9826446695

प्रकाशक
सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़
आयुर्वेदिक कालेज के पीछे, सरस्वती विहार, रायपुर ४९२०१० (छ.ग.)
दूरभाष : ०७७१-२२६२७७०,
२२६२३९३ २२६२३४२
web side : www.vidyabharticg.org
e-mail:vidyabharticg@gmail.com
e-mail-srijanmanjusha@gmail.com

मूल्य - 40 रुपये प्रति, 240/- वार्षिक

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	श्री उदय रावले	02
2.	डॉ. श्याम प्रसाद मुखर्जी	श्री रेवाराम सोनी	03
3.	स्वत्व- स्वाभिमान	डॉ. देवनारायण साहु	09
4.	भारतीय संस्कृति और कानून	डॉ. भूपेन्द्र करवन्दे	07
3.	स्व का बोध आत्मज्ञान की पहली सीढ़ी	रामेश्वर गुप्ता	06
6.	स्वतंत्रता से स्वराज तक	शताब्दी सुबोध पाण्डेय	11
7.	भारतीय त्यौहार	संजय शर्मा	13
8.	गोस्वामी तुलसीदास एवं राष्ट्रीय एकता	देवेश कुमार सोनी	16
9.	कविताएँ	एम.एल. नत्थानी	18
11.	कविताएँ	श्री निश्चय बाजपेयी एवं गिरीश पंकज	17
12.	विशिष्ट प्राचार्य प्रशिक्षण		20
13.	शिशुवाटिका		21
14.	सामान्य प्रशिक्षण		23
15.	दक्षता वर्ग		24
16.	समाचार		26
17.	वार्षिक गीत		36
18.	मेधावी छात्र परीक्षा परिणाम		37

पत्रिका में छपे हुए लेख लेखकों के अपने विचार हैं।

सम्पादकीय

प्रिय पाठक मन,

जय जोहार,

'सृजन मञ्जूषा' के ये दारी के अंक हा विद्या भारती द्वारा आयोजित प्रशिक्षण वर्ग के वृत्त अउ 'स्व का बोध' विषय ला ले के आवत हे। नया सत्र में काम के गति बाढ़य परिणाम भी अच्छा आवय, पढ़इया लइका मन के सर्वांगीण विकास होवे, हमारा लक्ष्य में कहे अनुसार युवक तइयार होवै एखर खातिर गर्मी के छुट्टी मा प्रशिक्षण वर्ग लगाथे अउ आचार्य जी दीदी-भैया मनला कस के सिकोथे। इही बात ला बताय बर अउ वर्ग मन में का विषय सिखाय हे ये ला मेहा एक कविता के माध्यम से बतात हौं-

पाए हैं हम प्रशिक्षण, विद्या भारती योजना से।
हमने कमर है कस ली, करने को काम उत्तम।।धृ.।।
शिक्षा की नई नीति, अवगत हमें कराई।
क्रिया-कलाप द्वारा, शिक्षण विधि सिखाई।
अधिगम सरल कराने, नई पंचपदी आई।।1।।
नाना विषय है सीखें, बनने को आत्मनिर्भर।
व्यवहार दक्ष होने, सद्गुण विकास पाने।
आत्मा की शक्ति जागी, आया है ये सुअवसर।।2।।
नेतृत्व करने क्षमता, विकसित यहाँ हुई है।
विश्वास अब जगा है, बहु भाँति काम करके।
संवाद साधने को, भाषा प्रयोग सीखे।।3।।
संस्कार जन्य शिक्षा, करने बढ़े कदम अब।
अज्ञान और अशिक्षा, के घाव पर हो मरहम।
जागृत समाज करने, संकल्प ले बढ़ें हम।।4।।
विद्या से मुक्ति पाने, का भाव धारना है।
दीपक जले हैं अगणित, तब संगठन खड़ा है।
सबके समर्पणों से अब लक्ष्य साधना है।।5।।

अउ एक अभिनव प्रयोग प्राचार्य मन बर होईस हे ओखर 2 माह के प्रशिक्षण होईस, ऊपर लिखे सब काम के संग ओ मनहा

शिशु मंदिर का प्रशासन, वित्तीय काम के संग।
अभिलेख अद्यतन हो, शिक्षण में भाग लेकर।
कैसे समय प्रबंधन करना ये सीखा हमने।।6।।

येला अउ सीखे हे। अइसन 15 दिन, 20 दिन, 2 माह के प्रसिक्षण से प्राचार्य, आचार्य मन ला शिशु मंदिर योजना, का हावै से लेकर कैसे काम करना अउ कोनसा परिणाम पाना हे ये बारे में सिखाय गेहे। येखर अच्छा परिणाम उही साल के काम में दिखाई देही ऐसन विचार अउ शुभ कामना हे।

स्व का बोध माने अपन भाषा, संस्कृति, लोगन, वेश-भूषा, संस्कार, परम्परा, देश के नियम-कानून व्यापार-व्यवसाय सबमें भारतीयता, भारतीय विचार, भारतीय आचार अउ संस्कार के अनुसार काम करना, एखर बोध-माने ज्ञान कराना हरय, सब बात ला हमन जानत हावन पर अपन स्वार्थ अउ आधुनिकता के खातिर ओला छोड़ के काम करत हन। देश, संस्कृति, सभ्यता के नुकसान होवत हे। पश्चिमी देश के हवा हमन ला इहाँ से दूर लेगथ हे। हमन बोहावत जात हन। सुंदर संस्कृति-सभ्यता, परम्परा, कुटुम्ब भाव ला छोड़त जात हन अउ ओखर से कष्ट भी पावत हन।

मनुष्य से मानवता खतम होवत हे। येला रोके बर जन-जागरण इही एक उपाय हावय। बस्ती-बस्ती, घर-घर, मुहल्ला-मुहल्ला मा, स्वदेशी भाव, भारतीय सस्कृति के भाव, भारतीय परिवार के भाव भरे बर संपर्क, विचार के आदान-प्रदान, कार्यक्रम योजना के जरूरत हे। आओ हम अब अपन भारत महतारी बर ये बीड़ा ला उठाय के काम करे बर संकल्प लेवन अउ जब तक हमर देश, हमर समाज भारतीय परंपरानुसार अपन परिवार अउ जीवन जीये के कला मही अपनावै तब तक प्रयास में जुटे रहिबो। हमर देश फेर भारतीयता के रंग में खड़ा होही।

उदय रावले
संपादक

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी

रेवाराम सोनी
पूर्व सचिव/अध्यक्ष
ग्राम भारती जिला रायपुर

जीवन वृत्त

06 जुलाई 1901 को कलकत्ता के अत्यंत प्रतिष्ठित परिवार में डॉ. श्यामा प्रसाद का जन्म हुआ उनके पिता सर आशुतोष मुखर्जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे वे शिक्षा विद थे। डॉ. मुखर्जी ने 1917 में मेट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की तथा 1921 में बी.ए. की उपाधि प्राप्त की। 1923 में विधि स्नातक कर विधि की उपाधी ग्रहण करने के पश्चात् विदेश चले गये। 1926 में इंग्लैण्ड से बैरिस्टर बनकर स्वदेश लौटे। अपने पिता का अनुसरण करते हुए अल्पायु में विद्या अध्ययन के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलताएँ अर्जित कर ली थी। 33 वर्ष की अल्पायु में वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति बने। इस पद पर नियुक्ति पाने वाले सबसे कम आयु के कुलपति थे। एक विचारक, प्रखर शिक्षा विद के रूप में उनकी उपलब्धि तथा ख्याति निरंतर आगे बढ़ती गई।

राजनैतिक जीवन

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने स्वेच्छा से समाज में अलख जगाने के उद्देश्य से राजनीति में प्रवेश किया। वे सच्चे अर्थो में मानवता के उपासक और सिद्धान्तवादी थे। उन्होंने बहुत से गैर कांग्रेसी हिन्दुओं की मदद से कृषक प्रजा पार्टी से मिलकर प्रगतिशील गठबंधन का निर्माण किया। इस सरकार में वे वित्तमंत्री बने। इसी समय वे वीर सावरकर के राष्ट्रवाद के प्रति आकर्षित हुए और हिन्दू महासभा में सम्मिलित हुए।

मुस्लिम लोग की राजनीति से बंगाल का वातावरण दूषित हो रहा था। वहाँ सांप्रदायिक विभाजन की नौबत आ रही थी तथा सांप्रदायिक लोगों को ब्रिटीश सरकार प्रोत्साहित कर रही थी।

ऐसी विषम परिस्थिति में उन्होंने यह सुनिश्चित करने का बीड़ा उठाया कि बंगाल में हिन्दुओं की उपेक्षा न हो अपनी विशिष्ठ रणनीति से उन्होंने बंगाल के विभाजन के मुस्लिम लोग के प्रयासों को पूरी तरह नाकाम कर दिया। 1942 में ब्रिटीश सरकार ने विभिन्न राजनैतिक दलों के छोटे-बड़े सभी नेताओं को जेल में डाल दिया।

डॉ. मुखर्जी इस धारणा के प्रबल समर्थक थे कि सांस्कृतिक दृष्टि से हम सब एक है इसलिए धर्म के आधार पर वे विभाजन के कट्टर विरोधी थे। वे मानते थे कि विभाजन संबंधी उत्पन्न हुई परिस्थिति ऐतिहासिक और सामाजिक कारणों से थी वे मानते थे कि आधार भूत सत्य यह है कि हम सब एक हैं, हममें कोई अन्तर नहीं है, हम सब एक ही रक्त के है। एक ही भाषा एक संस्कृति और एक ही हमारी विरासत है। परन्तु डॉ. मुखर्जी के इन विचारों को अन्य राजनैतिक दल के तत्कालिन नेताओं ने अन्यथा रूप से प्रचारित-प्रसारित किया। बावजूद इनके लोगों के दिलों में उनके प्रति अथाह प्यार स्नेह समर्थन बढ़ता गया। 1946 में मुस्लिम लीग ने जंग की राह पकड़ ली और कलत्ता में भयंकर बर्बरता पूर्वक अमानवीय मारकाट हुई उस समय कांग्रेस का नेतृत्व सामूहिक रूप से आतंकित था।

भारतीय जनसंघ की स्थापना

ब्रिटीश सरकार की भारत विभाजन की गुप्त योजना और षडयंत्र को एक कांग्रेस के नेताओं ने अखंड भारत संबंधी अपने वादों को ताक पर रखकर स्वीकार कर लिया। डॉ. मुखर्जी ने बंगाल और पंजाब के विभाजन की मांग उठाकर प्रस्तावित पाकिस्तान का विभाजन कराया तथा आधा बंगाल आधा पंजाब खंडित भारत के लिए बचा लिया।

गांधीजी और सरदार पटेल के अनुरोध पर वे भारत के पहले मंत्रीमंडल में शामिल हुए। उन्हें उद्योग विभाग की जिम्मेदारी सौंपी गई। संविधान सभा और प्रांतीय संसद के सदस्य और केन्द्रीय मंत्री के नाते उन्होंने शीघ्र ही विशिष्ट

स्थान बना लिया। किन्तु उनके राष्ट्रवादी चिंतन के चलते अन्य नेताओं से मतभेद बराबर बने रहे फलतः राष्ट्रीय हितो की प्रतिबद्धता को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता मानने के कारण उन्होंने मंत्रीमंडल से त्यागपत्र दे दिया। उन्होंने एक नई पार्टी बनायी जो उस समय विरोधी पक्ष के रूप में सबसे बड़ा दल था। अक्टूबर 1951 में भारतीय जनसंघ का उद्‌भव हुआ। श्री गुरुजी सरसंघ चालक रा. स्व. संघ के परामर्श पर 21 अक्टूबर 1951 को दिल्ली में भारतीय जनसंघ की स्थापना कर पहले अध्यक्ष चुने गये 1952 के आम चुनाव में भारतीय जनसंघ ने डॉ. श्यामा प्रसाद के नेतृत्वमें तीन सीटे जीती जिसमें एक वे स्वयं थे। उन्होंने संसद के भीतर राष्ट्रीय लोक तांत्रिक पार्टी का गठन किया था। जिसमें 32 सांसद 10 राज्य सभा सदस्य शामिल थे। हालांकि स्पीकर ने विपक्षी दल की मान्यता नहीं दी।

श्री मुखर्जी जम्मू कश्मीर को भारत का पूर्ण अविभाज्य अंग बनाना चाहते थे। उस समय जम्मू काश्मीर का अलग झंडा अलग संविधान था। वहां का मुख्यमंत्री (वजीरे आलम) अर्थात् प्रधानमंत्री कहलाता था– डॉ. श्यामा प्रसाद में दो प्रधान दो विधान, दो निशान नहीं चलेगा का नारा दिया तथा धारा 370 को समाप्त करने की जोरदार वकालत की जिसे मोदी सरकार ने समाप्त कर डॉ. मुखर्जी के सपने को पूरा कर दिखाया।

स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका–

डॉ. मुखर्जी ने 1942 में बंगाल गठबंधन सरकार से अपने पद से त्याग पत्र दे दिया। उन्होंने प्रांत के गवर्नर को पत्र लिखकर भारतीयों के लिए स्वशासन की मांग की। इसके बाद उन्होंने बंगाल के अकाल से निपटने के लिए किये गये मानवीय प्रयासों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वे मुस्लिम लीग के सबसे प्रमुख विरोधियों के रूप में उभरे और विभाजन की परियोजना के खिलाफ ऐकृत भारत के समर्थन में कई जोशीले भाषण दिये।

संविधान निर्माण में योगदान

मुखर्जी कांग्रेस पार्टी के टिकट पर पं. बंगाल से संविधान सभा के लिए चुने गये थे।

डॉ. मुखर्जी भारत की अखंडता और कश्मीर के विलय के दृढ़ समर्थक थे। उन्होंने अनुच्छेद 370 के प्रावधानों को भारत के बालकनीकरण की संज्ञा दी थी। 370 के प्रावधानों को हराने भारतीय जनसंघ हिन्दू महासभा और राम राज्य परिषद ने संयुक्त रूप से सत्याग्रह आरंभ किया था।

प्रमुख लेखन –

मुखर्जी एक प्रखर शिक्षाविद् थे जिन्होंने भारतीय इतिहास और शिक्षा प्रणाली पर लिखा उनकी उल्लेखनीय कृतियों में आत्मकथात्मक पुस्तक लीब्स फ्राम ए डायरी, ब्रिटीश भारत में शिक्षा पर ग्रंथ और ''भारतीय संघर्ष का एक चरण'' शामिल है जिसे अंग्रजों ने प्रतिबंधित कर दिया था। डॉ. मुखर्जी के नाम महत्वपूर्ण स्थान संस्थान कलकत्ता के एक मुख्य मार्ग का नाम डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी रोड किया गया है।

1945 में कोलकाता में एक महाविद्यालय का नाम श्यामा प्रसाद कालेज रखा गया है। दिल्ली विश्वविद्यालय के श्यामा प्रसाद मुखर्जी कालेज की स्थापना 1969 में उनकी स्मृति में की गई। अहमदाबाद में एक पुल दिल्ली का एक मुख्य मार्ग श्यामा प्रसाद मुखर्जी मार्ग कहा जाता है। 2001 में भारत सरकार के प्रमुख अनुसंधान वित्तपोषण संस्थान सी.एस.आई.आर. ने उनके नाम पर एक फेलोशिप की स्थापना की दिल्ली नगर निगम एमडीसी की650 करोड़ की लागत से बनी दिल्ली की सबसे ऊँची इमारत डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी सिविक सेंटर रखा गया है। एमसीडी में डॉ. श्यामा प्रसाद स्वीमींग पुल काम्पलेक्स भी बनाया है। जिसमें 2010 में कामन वेल्थ गेम्स के दौरान जलीय कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

बेंगलोर में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी फ्लाईओवर का निर्माण किया गया है। नया रायपुर अटल नगर छ.ग. में अंतर्राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान का नाम डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी सू.प्रौ. संस्थान रखा गया है। गोवा विश्वविद्यालय में इनडोर स्टेडियम डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नाम रखा

गया है। भोपाल में एक शहर का नाम डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी नगर किया गया है। कोलकाता पोर्ट का नाम श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट कर दिया गया है। जम्मू काश्मीर में एनएच44 पर एक सुरंग का नाम डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी सुरंग रखा गया है।

11 मई 1953 को काश्मीर में प्रवेश करते समय डॉ. मुखर्जी को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें और उनके दो साथियों को पहले श्री नगर की सेंट्रल जेल ले जाया गया बाद में उन्हें शहर के बाहर एक काटेज में स्थानांतरित कर दिया गया। मुखर्जी जी की हालत बिगड़ने लगी 19, 20 जून की रात पीठ में दर्द और तेज बुखार होने लगा। उनका उपचार किया गया। 22 जून को उन्हें हृदय क्षेत्र में दर्द महसूस हुआ। 23 जून को सुबह 3.40 मि. पर दिल का दौरा पड़ने पर उनकी मृत्यु हो गई। ऐसा राज्य सरकार ने घोषणा की थी।

हालांकि में उनकी मृत्यु ने पूरे देश में संदेह पैदा कर दिया और स्वतंत्र जांच की मांग की गई, उनकी मां जोगमाया देवी द्वारा नेहरूजी से गंभीर अनुरोध भी किया गया। नेहरू ने मृत्यु के पीछे कोई रहस्य नहीं की घोषणा की किन्तु यह तथ्य जोगमाया देवी को स्वीकार्य नहीं हुआ और निष्पक्ष सूक्ष्म जांच का अनुरोध किया और नेहरू ने अनुरोध को नजरंदाज कर कोई जांच आयोग तक गठित नहीं किया।

2004 में श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने दावा किया था कि जम्मू और काश्मीर में मुखर्जी की गिरफ्तारी एक साजिश थी और मुखर्जी की मृत्यु अभी भी रहस्यमय बनी हुई है। भाजपा ने 2011 में मुखर्जी की मौत की जांच की मांग की थी।

गुरू का स्थान श्रेष्ठ

एक राजा को पढ़ने लिकने का बहुत शौक था। एक बार उसने मंत्री–परिषद के माध्यम से अपने लिए एक शिक्षक की व्यवस्था की। शिक्षक राजा को बढ़ाने के लिए आने लगा। गुरू तो रोज खूब मेहनत करते थे परन्तु राजा को उस शिक्षा का कोई लाभ नहीं हो रहा था। राजा बड़ा परेशान, गुरु की प्रतिभा और योग्यता पर सवाल उठाना भी गलत था क्योंकि वो क बहुत ही प्रसिद्ध और योग्य गुरु थे। आखिर में एक दिन रानी ने राजा को सलाह दी कि राजन आप इस सवाल का जवाब गुरु जी से ही पूछ कर देखिये। राजा ने एक दिन हिम्मत करके गुरूजी के सामने अपनी जिज्ञासा रखी, हे गुरुवर क्षमा कीजियेगा, मैं कई महिनों से आपसे शिक्षा ग्रहण कर रहा हूँ पर मुझे इसका कोई लाभ नहीं हो रहा है। ऐसा क्यों है? गुरु जी ने बड़े ही शांत स्वर में जवाब दिया। राजन इसका कारण बहुत ही सीधा सा है– गुरूजी ने कहा – राजन बात बहुत छोटी है परन्तु आप अपने बड़े होने के अहंकार के कारण इसे समझ नहीं पा रहे हैं और परेशान और दुखी हैं। माना कि आप एक बहुत बड़े राजा हैं। आप हर दृष्टि से मुझ से पद और प्रतिष्ठा में बड़े हैं परन्तु यहाँ पर आप का और मेरा रिश्ता एक गुरू और शिष्य का है। गुरु होने के नाते मेरा स्थान आपसे उच्च होना चाहिए, परन्तु आप स्वयं ऊंचे सिंहासन पर बैठते हैं और मुझे अपने से नीचे के आसन पर बैठाते हैं। बस यही एक कारण है जिससे आपको न तो कोई शिक्षा प्राप्त हो रही है और न ही कोई ज्ञान मिल रहा है। आपके राजा होने के कारण मैं आप से यह बात नहीं कह पा रहा था।

स्वत्व- स्वाभिमान

- डॉ. देवनारायण साहु
संगठन मंत्री
छत्तीसगढ़ प्रांत विद्या भारती

स्वत्व, स्वाभिमान ये दोनों शब्दों से हम परिचित है। स्व का अभिमान माने स्वाभिमान। अभिमान यहाँ गौरव के भाव में व्यक्त है। ऐसे गौरवशाली स्व का विचार हम यहाँ करने वाले है। स्व माने क्या ऐसा प्रश्न उठने पर अपना भाव मन में आया है। जिससे अपनापन होगा वह अपना। अपना देश, अपना राष्ट्र, अपनी संस्कृति, अपना समाज, अपना परिवार, अपना व्यवसाय, अपना काम, ये सब अपने है क्योंकि इन सब से अपनापन है। अपना अधिकार है, अपना स्वामित्व है।ैसा सब जो अपना है वह स्वत्व है।

इस स्वत्व की रक्षा करना, इसका संवर्धन करना, इसका विकास करना हमारा दायित्व है, हमारा कर्तव्य है। राष्ट्र का विचार करे तो इसका भूगोल है। इसकी संस्कृति है, इसका विचार है, भाव है और इसके जन है। भू-भाग सुरक्षित रहे इसलिए सेना है, शासन है, अंतर्राष्ट्रीय संबंध है, युद्ध सामग्री है। ये सब श्रेष्ठ और सक्रिय व सजग है तो भू-भाग सुरक्षित है। संस्कृति का विचार करें तो हमारे राष्ट्र की संस्कृति हिन्दू संस्कृति है। कुछ लोग इसे भारतीय संस्कृति भी कहते है। पूरा समाज इस संस्कृति के बल पर बंधा है। यह अत्यंत उच्च विचारों से ओत-प्रोत है, समृद्ध है। भाव, धारणा, क्रिया-कलाप सभी पक्षों में श्रेष्ठ व वैज्ञानिक है। विचारों की उच्चता को देखें तो ज्ञान प्राप्ति के सभी मार्गो को सत्य मानकर सभी का सम्मान करते हुए अपने-अपने मार्गों से चलते हुए उस एक परब्रम्ह परमेश्वर से एकाकार करने की बात मानते हुए 'वसुधैव कुटुम्बकम' का भाव रखकर सारे विश्व को अपना मानना इतनी उदात्त है। इस संस्कृति में विज्ञान सम्मत आचरण में आने वाली बातें विकसित की है। पर्यावरण की सुरक्षा, पर्यावरण संवर्धन, मानव स्वास्थ्य, पशु-पक्षी सभी का हित हो ऐसा मान्यताएँ व कार्य आचरण में लाना सिखाया गया है। ये अलग बात है कि इस श्रेष्ठ संस्कृति को मानने वाले ही आज अपने स्वार्थ व अज्ञानता के कारण इसका अनुसरण करना भूल रहे हैं।

विचार के बारे में कहें तो वेद, उपनिषद्, 18 पुराण की ज्ञान सामग्री का अध्ययन करे इसमें कहे ब्रम्ह विवेचन को समझें, केवल कथा पर न रहे तो सम्पूर्ण ब्रम्हांड के कल्याण का विचार जिसमें मानव, प्रकृति, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, सब के कल्याण का विचार है। मानव को अपनी मानवीय भावना जागृत रखकर दया, करुणा, सेवा का भाव ही सिखाया है। तेन त्यक्तेन भुंजिथा कहते हुए उपनिषद आवश्यक उसका उपभोग शेष संपूर्ण समाज में बांटने की बात करते है। त्वदीय मस्तु गोविंद तुभ्यमेव समर्पयेत् - की भावना भी इसी विचार का अनुसरण करती है। किसी एक वर्ग, किसी एक समाज, किसी एक उपासना पद्धति नहीं अपितु समग्र मानव जाति और प्रकृति में उत्पन्न समग्र जीव-जन्तु के कल्याण की भावना व्यक्त करने वाला विचार है।

ऐसी श्रेष्ठ संस्कृति व विचार वाले राष्ट्र के हम जन हैं। विभिन्न जातियों, समाजों के होते हुए भी एकता के सूत्र में बंधे होना चाहिए। पर दुर्भाग्य है, ऐसा नहीं है। शायद इसका कारण सदियों की गुलामी में शासकों ने हमें बांटकर अपना स्वार्थ साधा है। उस प्रभाव से हम आज तक नहीं निकल सकें हैं। इसीलिए आवश्यकता है आज हमें अपने स्वत्व को पहचानो, उसके अनुरूप जीवन जीने, व राष्ट्र के विकास में अपनी एकता को प्रदर्शित करने का समय है। इसको पहचानकर कार्य करने की जरूरत है। सिंहनी ने अपने शावक को भेड़ों के झुंड से निकालकर अपने साथ रखकर उसे स्वत्व का बोध कराया और उसे भेड़ से पुनः सिंह बनाया। आज इसी की

आवश्यकता है जो वर्तमान भारतीय सरकार कर रही है। हमें उस पर विश्वास रखकर अपने स्वार्थ को बाजू रखकर राष्ट्रहित साधना आज की अनिवार्य आवश्यकता है।

हमारे महापुरुषों ने इसके लिए बलिदान दिए। अपने स्वाचरण से हमें मार्ग दिखाया है। उनका स्मरण कर उनकी शिक्षा को अपनाना होगा। स्वधर्म, स्व भाषा, स्व शिक्षा, इतिहास, सब पर विचार करना होगा। हमें याद करना होगा स्वामी विवेकानंद, ज्योतिबा फुले, सावित्री बाई फुले, अहिल्या बाई होलकर, राजा राम मोहन राय के कार्यों व समाज सुधार हेतु प्रयत्नों का विचार कर आज भी व्याप्त समाज की कुरीतियों, राष्ट्रवादी प्रवृत्तियों में सुधार हेतु, क्रांतिकारी कदम उठाने होंगे इसके लिए समाज प्रमुखों को आगे आना होगा।

स्व भाषा का उत्थान करते हुए भारत में बोली जाने वाली सभी भाषाओं का सम्मान करना आज की आवश्यकता है। सभी भारत की मूल संस्कृत भाषा से उत्पन्न भाषाएं हैं। अलग-अलग परिवेश में फली-फूली हैं। हर 100 कोस मे नए शब्द नये लहजे इसमें जुड़ते-जुड़ते नई भाषा का रूप ले लेती है। यह सब हमारी अपनी ही भाषाएँ हैं। अतः उनका सम्मान करें। राष्ट्रघाती शक्तियाँ हमें भाषा के आधार पर बाँटकर कमजोर करना चाहती है। राष्ट्र की एकता, संस्कृति की रक्षा भाषायी एकता में छुपी हुई है। अतः सभी भाषाओं का सम्मान करना आवश्यक है।

आज ग्लोबलाइजेशन का जमाना है। इस व्यापार प्रधान समय में अपना देश विश्व में अपनी पहचान बना सके इसलिए भारत का पैसा भारत में रहे यह नितांत आवश्यक है। वरना भारत की बड़ी जनसंख्या अनेक देशों के व्यापार से लाभ देने वाली हो जायेगी। ये देश बड़े होकर भारत को आर्थिक रूप से कमजोर कर उस पर अपनी आधीनता लाना चाहते हैं इसे रोकना है तो स्वदेशी भाव, रखकर स्वदेशी अपनाना होगा।

छत्तीसगढ़ राज्य के संदर्भ में स्वत्व की रक्षा के लिए संघर्ष हुआ हल्बा सत्याग्रह, परलकोट संघर्ष, कोई संघर्ष, बस्तर की रानी का संघर्ष, भूमकाल संघर्ष, वीर नारायण सिंह का संघर्ष हुआ है। समाज सुधार के क्षेत्र में पं. नारायण राव मेघावाले, घनश्याम सिंह गुप्त, पं. सुंदरलाल शर्मा, बै. छेदीलाल आदि ने स्वत्व के लिए कार्य किया है। साहित्य क्षेत्र में माधव राव सप्रे, वामनराव लाखे, छोटेलाल स्वर्णकार, ठाकुर प्यारेलाल आदि ने स्वाभिमान हेतु साहित्य रचना की। डॉ. राधाबाई, दयावती बाई, रोहिणी बाई परघनिया, किकतीबाई बघेल के योगदान के बिना छत्तीसगढ़ स्वाभिमान यात्रा अधूरी है। स्व की रक्षा, स्वदेशी की महत्ता के लिए अनेकानेक लोगों ने काम किया है। आज मुखर होकर इस दिशा में काम करने की महती आवश्यकता है।

देश की उन्नति, समृद्धि तभी होगी जब देश में शांति और सद्भावना होगी। यह तभी संभव है जब देश में भारतीयता बलवान होगी। भारतीय विचार, भारतीय संस्कार व स्वदेशी की मूल भावना देशभक्ति की भावना का दृढ़ीकरण व प्रगटीकरण होगा तब देश का विकास होगा जो हमें विश्व पटल में प्रमुख स्थान पर रखकर विश्व का मार्गदर्शक बनाएगा और तभी 'परम वैभवंनेतुम् एतद् स्वराष्ट्रम्' का सपना साकार होगा।

भारत माता की जय।

भारतीय संस्कृति और कानून

- डॉ. भूपेन्द्र करवन्दे
सहा. प्राध्यापक (विधि)
शास. जे. योगानन्दम छत्तीसगढ़
महाविद्यालय, रायपुर

भारतीय संस्कृति और कानून दोनों ही भारत के अभिन्न अंग हैं। भारतीय संस्कृति, जो कि विभिन्न धर्मों, भाषाओं, और परंपराओं का मिश्रण है, का प्रभाव भारतीय कानून पर भी देखा जा सकता है। वहीं, कानून, सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने और न्याय सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दोनों के बीच एक जटिल संबंध है, जहां कानून संस्कृति से प्रभावित होता है और संस्कृति कानून से।

अनुच्छेद 29 'अल्पसंख्यकों के हितों का संरक्षण'

यह अनुच्छेद सम्पूर्ण रूप से उन समुदायों की संस्कृति की रक्षा पर केंद्रित है जो भारत के संविधान के अनुसार अल्पसंख्यक हैं। संविधान के अनुसार- ''भारत के क्षेत्र या उसके किसी भी हिस्से में रहने वाले नागरिकों के किसी भी वर्ग को अपनी विशिष्ट भाषा, लिपि या संस्कृति रखने का अधिकार होगा।''

जैसा कि यह उद्धरण स्पष्ट करता है, यह छत्तीसगढ़, राजस्थान, उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों, ओडिशा की आदिवासी आबादी और पारसियों जैसे संख्यात्मक रूप से छोटे समूहों जैसे समुदायों को अपनी संस्कृति, भाषा और साहित्य को संरक्षित करने के लिए कदम उठाने की अनुमति देता है। यह उनकी विरासत को संरक्षित करने के लिए राज्य और किसी भी राज्य वित्त पोषित एजेंसी से सहायता प्राप्त करने के उनके अधिकार की भी पुष्टि करता है। यह, भी भेद करता है कि किसी भी नागरिक को उसके धर्म, जाति, भाषा, नस्ल या इनमें से किसी के आधार पर राज्य द्वारा संचालित किसी संस्था से सहायता से वंचित नहीं किया जाएगा।

अनुच्छेद 49- 'स्मारकों और राष्ट्रीय महत्व वाले स्थानों और वस्तुओं का संरक्षण'

संविधान का यह अनुच्छेद उन सभी स्मारकों और वस्तुओं के महत्व को पुर्नस्थापित करता है, जो भारत की विरासत से संबंधित हैं। राष्ट्रीय महत्व के ये टुकड़े राज्य के संरक्षण में होंगे, यदि उन्हें नुकसान हो। संविधान कहता है कि- प्रत्येक स्मारक या स्थान या कलात्मक या ऐतिहासिक रुचि की वस्तु की रक्षा करना राज्य का दायित्व होगा। कोई भी स्मारक जिसे संसद द्वारा या उसके द्वारा बनाए गए कानून के तहत राष्ट्रीय महत्व का घोषित किया गया है, उसे खराब होने, विरूपण, विनाश, हटाने, निपटान या निर्यात से बचाया जाना चाहिए, जैसा भी मामला हो।

अनुच्छेद 51A-(F) 'भारतीय संस्कृति की समृद्ध विरासत का महत्व और संरक्षण'

ऊपर उल्लिखित दो अनुच्छेदों के विपरीत जो राज्य के कर्तव्यों की गणना करते हैं; अनुच्छेद 51(ए) भारत के प्रत्येक नागरिक के मौलिक कर्तव्यों का हिस्सा है । संविधान लोगों को हमारी समग्र संस्कृति की मूर्त और अमूर्त विरासत को महत्व देने और संरक्षित करने का आदेश देता है। इससे यह भी पता चलता है कि हमारे समाज की परंपराओं और उसे संचालित करने के लिए बनाए गए कानूनों के बीच एक संबंध है। संस्कृति निरंतर बदलते समाज को प्रतिबिंबित करती है और कानून इसे संरक्षित करेगा और नागरिकों को इसमें अपनी भूमिका निभानी चाहिए। इन अनुच्छेदों के अलावा, संविधान और हमारे कानून निर्माताओं ने कई अधिनियम तैयार किए हैं, जो हमारी संस्कृति से संबंधित कानूनों को तोड़ने वालों को दंडित करते हैं।

प्राचीन स्मारक संरक्षण अधिनियम, 1904

ब्रिटिश सरकार ने स्मारक पर सरकार को प्रभावी संरक्षण और अधिकार प्रदान करने के लिए इस अधिनियम की स्थापना की ताकि वह राष्ट्रीय विरासत की रक्षा कर सके। यह अधिनियम

विशेष रूप से उन स्मारकों से संबंधित था जो व्यक्तिगत या निजी स्वामित्व की हिरासत में थे। किसी भी संरक्षित स्मारक के संरक्षण के लिए केंद्र सरकार और मालिक एक समझौते पर हस्ताक्षर करेंगे। यह स्वामी को स्मारक में कुछ जोड़ने, तोड़ने, परिवर्तन करने या विकृत करने से भी रोकता है। जिस जमीन पर स्मारक खड़ा है, उसे बेचने की स्थिति में जमीन खरीदने का पहला अधिकार सरकार का होगा।

प्राचीन स्मारक संरक्षण अधिनियम, जो पहली बार 1904 में अधिनियमित किया गया था, 1932 में प्राचीन स्मारक संरक्षण (संशोधन) अधिनियम के रूप में संशोधित किया गया था। इसके अलावा, 1958 में, केंद्र सरकार ने शहरी और ग्रामीण पुरातत्व बस्तियों में साइटों के प्रकार को व्यापक बनाने के लिए ''प्राचीन स्मारक और पुरातत्व स्थल और अवशेष अधिनियम'' लागू किया, जिसे इस कानून के तहत कवर किया जा सकता है। इसके अलावा, संसद ने राष्ट्रीय महत्व के ऐतिहासिक स्मारकों और पुरातत्व स्थलों को बेहतर ढंग से संरक्षित करने के लिए ''प्राचीन स्मारक और पुरातात्विक स्थल और अवशेष (संशोधन और मान्यता) अधिनियम, 2010'' भी तैयार किया।

---000----

स्मरण रहेंगे ब्रम्हानंद यादव

विद्या भारती में वैदिक गणित की विकास यात्रा (1995 से...) की जब भी चर्चा होगी मा. ब्रम्हानंद यादव तत्कालीन संगठन मंत्री सरस्वती शिक्षा परिषद महाकौशल प्रांत का उल्लेख अवश्य ही किया जायेगा।

विद्या भारती ने वैदिक गणित को अपने पाठ्यक्रम में 1995 में सम्मिलित किया। वैदिक गणित पाठ्यक्रम निर्धारण एवं क्रियान्वयन के लिए प्रथम अखिल भारतीय संगोष्ठी 12 से 14 अगस्त 1995 में सहभाग करने मा. ब्रम्हानंद जी के साथ में भी कुरुक्षेत्र गया था।

विद्या भारती मध्यक्षेत्र के तत्कालीन संगठन मंत्री मा. रोशन लाल सक्सेना ने वैदिक गणित के प्रचार-प्रसार को प्राथमिकता दी। मा. ब्रम्हानंद यादव संगठन मंत्री के दायित्व के साथ-साथ वैदिक गणित के क्षेत्रीय प्रमुख के रूप में हमारा मार्गदर्शन करते थे। सरस्वती शिशु मंदिर सिवनी के आचार्य के साथ-साथ मुझे प्रांतीय वैदिक गणित प्रमुख तथा क्षेत्र के सह प्रमुख का दायित्व दिया गया। तीन वर्ष बाद 1998 में वैदिक गणित के लिए पूर्णकालिक निकाला गया।

मा. संगठन मंत्री द्वय (क्षेत्रीय एवं प्रांतीय) के प्रयासों से वैदिक गणित के अनेकों प्रशिक्षण वर्ग सम्पन्न हुए और वैदिक गणित का प्रचार-प्रसार विद्या भारती मध्यक्षेत्र में तीव्र गति से हुआ।

''तुम पुस्तक पूर्ण करो मैं खिचड़ी बनाता हूँ।''

वैदिक गणित पर एक छोटी सी पुस्तक की विषयवस्तु लेकर मा. ब्रम्हानंद जी से मार्गदर्शन लेने जबलपुर परिषद कार्यालय 950 रूपम टावर गोल बाजार गया। मा. ब्रम्हानंद जी उस दिन कार्यालय में अकेले ही थे। उन्हें पुस्तक की सामग्री दिखाई, उन्होंने जो संशोधन बताये, सुझाव दिये तदानुरूप मैं संशोधन लेखन करने लगा तब उन्होंने कहा तुम पुस्तक पूर्ण करो मैं खिचड़ी बनाता हूँ, फिर भोजन करते हैं। मार्गदर्शन दिया, प्रोत्साहित किया, पुस्तक पूर्ण हुई। कार्य आगे बढ़ा।

15 जुलाई 2025 को उनका देहावसान हो गया। ईश्वर ने उन्हें लम्बी आयु दी। मुझे उनके मार्गदर्शन में वैदिक गणित के प्रचार-प्रसार का कार्य करने का अवसर मिला। मेरे स्मरण में ब्रम्हानंद यादव सदैव बने रहेंगे।

विनम्र श्रद्धांजलि...।

(देवेन्द्र राव देशमुख)
अ.भा. संयोजक, वैदिक गणित
विद्या भारती अ.भा. शिक्षा संस्थान

स्व का बोध - आत्म-ज्ञान की पहली सीढ़ी

रामेश्वर गुप्ता
संयोजक, बिलासा कला मंच बिलासपुर

आज की तेज़ रफ़्तार ज़िंदगी में हम लगातार दौड़ते जा रहे हैं — सफलता की ओर, मान-सम्मान की ओर, और दूसरों की उम्मीदों की ओर। लेकिन इस दौड़ में सबसे ज़्यादा अगर कुछ छूट रहा है, तो वो है हम स्वयं। हम बार-बार दूसरों से पूछते हैं कि हमें क्या करना चाहिए, लेकिन खुद से कभी नहीं पूछते कि हम कौन हैं, क्या चाहते हैं और क्यों चाहते हैं?

यही सवाल जब मन में उठते हैं, तो शुरू होती है स्व का बोध की यात्रा।

स्व का बोध क्या है?

स्व का बोध का अर्थ है अपने असली स्वरूप को जानना, उस अंतरात्मा की आवाज़ को पहचानना जो हर रोज़ हमारे भीतर बोलती है, लेकिन जिसे हम अक्सर अनसुना कर देते हैं।

यह बोध केवल हमारे नाम, काम, धर्म, जाति या पहचान तक सीमित नहीं होता। यह उनसे कहीं गहरा होता है। यह जानना कि हमारी सोच कहां से आती है, हमारे डर, हमारी इच्छाएं, हमारे सुख-दुख की जड़ क्या है।गोपाल कृष्ण शुक्ला जी लिखते हैं-

हृदय की रिक्तता का अगर बोध हो करना
देखना स्वयं को और मनन करना।
हृदय की महानता का अगर बोध हो करना
देखना किसी महान को और सम्मान करना।
रिक्तता और महानता का अगर अंतर हो नापना
अपने और उनके अंतर को हृदय से अनुमान करना।

स्व अर्थात हमारी स्वयं की पहचान,स्वयं का व्यक्तित्व। जीवन में यदि स्वाभिमान से जीना है तो स्व को पहचानना होगा। स्व के अनुभूति से ही हम अपने आप को स्थापित कर सकते हैं। समाज का आधार स्व हो जैसे स्वदेशी भाव,स्वदेशी कपड़े,स्वदेशी जीवनशैली, स्वदेशी संस्कृति, स्वदेशी संस्कार, स्वदेशी भोजन,स्वदेशी गीत संगीत, स्वदेशी भाषा,स्वदेशी चिकित्सा हो तभी हम असल मे स्वाधीन होंगे।

योगेश्वर भगवान श्री कृष्ण ने कहा है ''स्वधर्मे निधनं श्रेय:'' अपने धर्म मे मर जाना श्रेष्ठ है किंतु दूसरे के पंथ को नहीं अपनाना यही स्व है।

स्व का बोध क्यों ज़रूरी है?

1. सच्ची शांति के लिए: बाहर की दुनिया कितनी भी सुंदर हो, अगर मन अशांत है तो कुछ भी अच्छा नहीं लगता। आत्म-ज्ञान से भीतर की शांति मिलती है।
2. सही निर्णय के लिए: जब हम खुद को जानते हैं, तब जीवन के निर्णय स्पष्ट हो जाते हैं। तब हम भीड़ के पीछे नहीं भागते, अपनी राह चुनते हैं।
3. रिश्तों में सच्चाई: जब हम खुद से ईमानदारी रखते हैं, तब ही दूसरों से भी सच्चे रिश्ते बना पाते हैं।
4. दिशा और उद्देश्य: स्व का बोध हमें जीवन की दिशा देता है — यह समझने में मदद करता है कि हम किस रास्ते पर चलना चाहते हैं और क्यों।

स्व का बोध कैसे प्राप्त करें?

1. एकांत का अभ्यास करें: रोज़ कुछ समय केवल अपने साथ बिताएं। चुपचाप बैठें, केवल अपने मन की आवाज़ को सुनें।
2. लेखन करें: दिन के विचार, भावनाएं, डर, इच्छाएं— सब कुछ लिखें। लिखने से हम खुद को साफ़-साफ़ देखने लगते हैं।
3. प्रश्न पूछें: खुद से प्रश्न करें — क्या मैं जो कर रहा हूं, वो वास्तव में मेरी इच्छा है? मैं किससे डरता हूं और क्यों?
4. ध्यान करें: ध्यान से मन शांत होता है और भीतर की परतें खुलने लगती हैं। स्व को जानने के लिए यह सबसे प्रभावी साधन है।
5. सच्चाई स्वीकारें: अपने बारे में सच्चाई को स्वीकारना आसान नहीं होता, लेकिन स्व बोध की शुरुआत वहीं से होती है।

समाज और स्व का बोध

समाज अक्सर हमें एक ढांचे में ढालना चाहता है — कैसा दिखना है, कैसे बोलना है, क्या बनना है।

लेकिन स्व का बोध हमें यह समझने की शक्ति देता है कि कौन-सी बातें सच में हमारी हैं और कौन-सी बस दूसरों की उम्मीदें। यह हमें 'ना' कहने की हिम्मत देता है — उन चीज़ों से जो हमारी नहीं हैं।

निष्कर्ष

स्व का बोध कोई अचानक से होने वाला अनुभव नहीं है। यह एक यात्रा है — भीतर की यात्रा। जैसे-जैसे हम स्वयं को जानने लगते हैं, जीवन में स्पष्टता आने लगती है। हमारा सोचने का ढंग बदलता है, संबंध गहरे होते हैं और भीतर एक स्थायी शांति का जन्म होता है।

जब हम स्वयं को जान लेते हैं, तब दुनिया को भी सही दृष्टि से देख पाते हैं। स्व का बोध कोई लक्ज़री नहीं, बल्कि हर मनुष्य के जीवन की बुनियादी ज़रूरत है।

स्व को जानना ही सबसे बड़ा ज्ञान है।

स्वतंत्रता से स्वराज तक :'स्व' की यात्रा

-शताब्दी सुबोध पांडे
रायपुर, छत्तीसगढ़

स्वतंत्रता केवल शासन परिवर्तन नहीं है. यह आत्मिक जागरण की निरंतर यात्रा है। 15 अगस्त 1947 को हमने पराधीनता की बेड़ियाँ अवश्य तोड़ी, लेकिन क्या वह हमारी पूर्ण मुक्ति थी? क्या वह स्वराज था? स्वतंत्रता की तिथि तो निश्चित थी, पर स्वराज का लक्ष्य अब भी एक प्रक्रिया है जो हर पीढ़ी को अपने कर्म और संकल्प से प्राप्त करना होगा।

स्वतंत्रता और स्वराज, इन दो शब्दों के बीच का अंतर भारत के भविष्य की दिशा तय करता है। स्वतंत्रता का अर्थ बाहरी बंधनों से मुक्ति है-पर स्वराज का अर्थ है अपने भीतर नियंत्रण, विवेक, अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ जीना। स्वतंत्रता यदि अधिकार है. तो स्वराज उसका उत्तरदायित्व स्वतंत्रता वह शुरुआत हैं, जहाँ व्यक्ति अपने बंधनों से मुक्त होता है, पर स्वराज वह स्थिति है जहाँ वह अपनी चेतना और विवेक से प्रेरित होकर समाज हित में जीना सीखता है।

'स्व'-स्वधर्म, स्वसंस्कृति, स्वभाषा, स्वाभिमान और स्वविवेक- भारतीय जीवनदृष्टि की आत्मा है। जब तक हम अपने 'स्व' को नहीं पहचानते, तब तक स्वतंत्रता केवल एक शरीर रह जाती है, आत्मा विहीन किसी भी राष्ट्र का 'स्व' ही उसकी पहचान, शक्ति और दिशा तय करता है। यदि हम अपने मूलभूत मूल्यों को भूलकर केवल भौतिक स्वतंत्रता को आधार बनाएँगे, तो हमारा स्वराज अधूरा रह जाएगा।

स्व की यात्रा: भीतर से बाहर तक

हमारा 'स्व' केवल वैयक्तिक पहचान नहीं हैं, यह राष्ट्र की आत्मा से जुड़ा हुआ हैं। जब व्यक्ति अपने निर्णय स्वय करता है-पर वे निर्णय समाज, राष्ट्र और संस्कृति के हित में होते हैं- तभी वह स्वराज की दिशा में अग्रसर होता है। यह आत्मचिंतन और आत्मविकास का मार्ग है, जो बाहरी आजादी से कहीं अधिक गहरा और अर्थपूर्ण हैं।

स्वराज की यह अवधारणा केवल एक राजनीतिक सिद्धांत नहीं, बल्कि एक जीवनपद्धति है। इसमें अधिकार और कर्तव्य दोनों संतुलित रूप से विद्यमान होते हैं। यह उस समाज की रचना करता है जिसमें व्यक्ति न केवल स्वतंत्र होता है, बल्कि उत्तरदायी भी होता है। सही मायनों में स्वराज वहीं होता है जहाँ नागरिक अपनी भूमिका को समझते हुए राष्ट्र निर्माण में भागीदार बनें।

स्वदेशी: 'स्व' का व्यावहारिक रूप

स्वराज का मार्ग स्वदेशी से होकर जाता है। स्वदेशी केवल विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आत्मनिर्भरता का व्यवहारिक दर्शन है। यह हमारे गाँव, कुटीर उद्योग, स्थानीय भाषा, भोजन, शिक्षा, वस्त्र और जीवनशैली से जुड़ा हुआ है। यह उस मानसिकता को दर्शाता है जिसमें हम अपने संसाधनों पर गर्व करते हैं और उन्हें प्राथमिकता देते हैं।

जब हम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति अपने समाज के संसाधनों से करते हैं, तब हम न केवल आर्थिक स्वतंत्रता को मजबूत करते हैं, बल्कि सांस्कृतिक गौरव को भी अक्षुण्ण रखते हैं। स्वदेशी के माध्यम से हम 'स्व' को जीवन में उतारते हैं और यह भी सुनिश्चित करते हैं कि हमारा विकारा टिकाऊ, रागावेशी और आत्मबल से शुरु हो।

लोकतांत्रिक स्वराज: केवल सरकार से नहीं. स्वयं का उत्तरदायित्व

आज की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियाँ हमें यह सोचने को विवश करती हैं कि क्या हम केवल सता से

स्वतंत्र हैं या स्वयं को भी नियंत्रित करने में सक्षम हैं? क्या हमारी अभिव्यक्ति मर्यादित है? वया हमारी स्वतंत्रता दूसरों की गरिमा को सम्मान देती है?

स्वराज का तात्पर्य यह नहीं कि हम जो चाहें कहें या करें, बल्कि यह है कि हम क्या कहें, कैसे कहें, कब कहें, और किनकी सीमाओं का ध्यान रखें। एक स्वराज्यशील नागरिक अपनी स्वतंत्रता को दूसरों के अधिकारों और गरिमा के प्रति सम्मानपूर्वक व्यवहार में लाता है। वह केवल बोलता नहीं, सुनता भी है, वह केवल विरोध नहीं करता, संवाद भी करता – हैं।

विचारों में असहमति हो सकती है, पर विरोध का तरीका ऐसा होना चाहिए जिससे रामाज में संवाद बना रहे, न कि टकराव इसी में लोकतंत्र की गरिमा और स्वराज की पहचान है।

पंच परिवर्तन: स्वराज की ओर पाँच कदम

1. सामाजिक समरसता धर्म, जाति, भाषा और क्षेत्र से ऊपर उठकर समता और भाईचारे की भावना।

2. कुटुंब प्रबोधन – परिवार को संवाद, संस्कार और सहभागिता का केंद्र बनाना॥

3. पर्यावरण संरक्षण –जल, वायु, वृक्ष और मिट्टी के प्रति जिम्मेदारी का व्यवहार

4. स्वदेशी आत्मनिर्भरता–शिक्षा, भाषा, तकनीक और उत्पादन में स्थानीयता को प्राथमिकता देना।

5. नागरिक कर्तव्य–संविधान, मतदान, शिष्टाचार और नैतिकता के मूल्यों को जीत।

इन पाँच क्षेत्रों में परिवर्तन केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं हैं, यह समाज और व्यक्ति की भागीदारी से ही संभव है। प्रत्येक नागरिक जब इन बिंदुओं को जीवन में उतारता है, तभी सच्चे स्वराज की नींव बनती है।

स्वराज की समकालीन आवश्यकता

आज जब हम 'अमृतकाल' में प्रवेश कर रहे हैं, तो यह पुन: आत्ममंथन करने का समय ही क्या हमारी स्वतंत्रता केवल एक संवैधानिक उपलब्धि है या वह हमारी चेतना और कर्म में भी परिलक्षित होती है? क्या हम केवल उपभोक्ता बन चुके हैं या उत्तरदायी नागरिक भी हैं?

एक सच्चे स्वराज्यशील समाज में-

– बच्चा अपने भविष्य का निर्णय आत्मविश्वारा से ले सकता है,

– महिला मर्यादा और अधिकारों की रक्षा कर सकती है.

– कारीगर अपने कौशल से आत्मनिर्भर जीवन जी सकता है।

– किसान और श्रमिक अपनी भूमि और श्रम का सम्मान पा सके।

यह केवल विकास का मॉडल नहीं, बल्कि आत्मगौरव, सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक पुनरुत्थान का संकल्प है।

निष्कर्ष – 'स्व' से स्वराज तक

स्वराज एक वैदिक संकल्प है स्वयं पर संयम के साथ रहना यह संकल्प तब ही पूरा होगा जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने 'स्व' को पहचानेगा और उसे राष्ट्रहित में जीएगा। जब व्यक्ति अपने अंदर के अनुशासन को बाहरी स्वतंत्रता . के साथ जोड़ता है, तभी वह सच्चा स्वराज्यशील बनता है।

जब हम अपने विचारों, उत्पादों, जीवनशैली और मूल्यबोध में भारतीयता को अपनाते हैं, तभी हम कह सकते हैं- हम केवल स्वतंत्र नहीं, हम स्वराज्यशील हैं।

स्वराज केवल सरकार का विषय नहीं, यह हमारे चरित्र, कर्तव्य और चेतना की अभिव्यक्ति हैं। यही वह पथ है, जिससे भारत 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना से विश्वगुरु बन सकता है।

भारतीय त्यौहार

संजय शर्मा
प्रधानाचार्य, स.शि.मं. जामुल

भारत त्योहारों का देश है। यहां हर वर्ष, हर माह, हर राज्य में तिथि अनुसार कई तरह के त्योहार मनाए जाते हैं। भारत में मनाए जाने वाले हर त्योहार के पीछे कोई ना कोई ऐतिहासिक कहानी होती है। जिसमें झलक होती है हमारे देश की सांस्कृतिक विरासत की। जो पीढियों से हमारे देश में मनाए जा रहे हैं। हर त्यौहार की अपनी एक खासियत है और एक धार्मिक महत्व। हमारे देश में विभिन्न धर्मो और जातियों के लोग रहते हैं और उनके विविध कर्म संस्कार होते हैं। वह अपने कर्म और सस्कारों को समय-समय पर विशेष रूप से प्रकट करते रहते हैं, इन रूपों को हम आए दिन बड़े आयोजनों के रूप में देखा करते हैं। इस प्रकार हर धर्म में, कोई ना कोई उत्सव मनाए जाने की परपरा है। जिन्हें हम बरसों से मनाते आ रहे हैं क्योंकि ये त्यौहार, हमारे देश की संस्कृति, रीति-रिवाज और परंपराओं के प्रतीक है। विश्व में सबसे ज्यादा त्योहार हमारे देश में ही मनाये जाते हैं।

गुरु पूर्णिमा -आज देशभर में गुरु पूर्णिमा का पर्व मनाया जा रहा है। आषाढ़ पूर्णिणमा को व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है क्योंकि इस दिन वेदव्यासजी का भी जन्म हुआ था। महर्षि कृष्णद्वैपायन वेद व्यास ने 18 पुराण भागवत महापुराण खे हैं, साथ ही वे महाभारत ग्रंथ के रचयिता भी है। वेदव्यासजी को भगवान का अवतार भी माना जाता है। आइए जानते हैं कैसे शुरू हुई गुरु पूर्णिमा और इसका क्या महत्व है.. आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि को गुरु पूर्णिमा का पर्व मनाया जाता है। महर्षि व्यास का अवतरण आषाढ़ की पूर्णिमा को ही हुआ था। व्यासजी पाराशर ऋषि के पुत्र और महर्षि वशिष्ठ के पौत्र थे। व्यासजी गुरुओं के भी गुरु माने जाते हैं। इसलिए आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को सभी शिष्य अपने-अपने गुरु की पूजा विशेष रूप से करते हैं। यह गुरु पूजा विश्वविख्यात है, इसे व्यास पूजा का पर्व भी कहते हैं। गुरु शब्द का अभिप्राय हे अधेरे से उजाले की ओर ले जाने वाला। गिरति अज्ञानान्धकार मइति गुरुः अर्थात जो अपने सदुपदेशों के माध्यम से शिष्य के अज्ञानरूपी अधकार को नष्ट कर देता है, वह गुरु है। गुरु सर्वेश्वर का साक्षात्कार करवाकर शिष्य को जन्म-मरण के बधन से मुक्त कर देते हैं। अतएव संसार में गुरु का स्थान विशेष महत्व का है।

हरियाली अमावस्या धर्म में हरियाली अमावस्या का विशेष महत्व है। हरियाली अमावस्या को सावन मगावस्या भी कहा जाता है। जानें इस साल हरियाली अमावस्या कब है। हिंदू धर्म में हरियाली अमावस्या का विशेष महत्व है। इस दिन बड़ी सख्या में भक्त पवित्र नदी में स्नान करने के बाद दान करते हैं। सावन माह की अमावस्या को हरियाली अगावस्या कहा जाता है। सावन का महीना भगवान शिव को समर्पित है। ऐसे में हरियाली अमावस्या पर भगवान शिव का जलाभिषेक करना अत्यंत शुभ व लाभकारी माना गया है। मान्यता है कि इस दिन पितरों का तर्पण व पिंडदान करने से जीवन में सुख-समृद्धि आती है। जानें जुलाई में हरियाली अमावस्या कब है व स्नान-दान मुहूर्त।

हरेली-हरेली त्योहार को श्रावण मास के कृष्ण पक्ष अमावस्या में मनाया जाता है। हरेली त्यौहार किसान और सभी छत्तीसगढ़वासियो का त्यौहार है। हरेली मतलब प्रकृति के चारों तरफ हरिपाली से है। किसान खेत में बोआई, बिजासाई कार्य पूर्ण करके इस त्यौहार को मनाता है। इस दिन सभी किसान भाई अपने खेत में उपयोग होने वाले औजार जैसे नागर, जुड़ा, रापा, हसिया, कुदारी, गैती, टंगिया, बसला, बिन्दना, आरी, पटासी, साबर आदि समान का हल्दी, दूथ, चावल के पीसन (आटा) के घोल को ओजारो पर छिडकाव करतें है और

चावल से बने चीला रोटी, नारियल, हुम–जग से औजारों और धरती माता का पूजन करते हैं, त्यौहार के दिन सभी घरों में मिष्ठान जैसे–पुडी, बडा, खुरमी, ठेठरी, कोचोंडी आदि पकवान बनाये जाते है, तथा अपने पड़ोसियों को भोजन के लिए आमंत्रित करते हैं समस्त प्रदेशवासी इस त्यौहार को हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। त्योहार के दिन ग्रामों में खेलों का आयोजन किया जाता है, जैसे– मटका फोड़, गोली चम्मस, जलेबी दौड़, गेड़ी दौड, गेड़ी नृत्य, इन खेलों में बच्चे, बुजुर्ग, जवान, महिला पुरुष सभी भाग लेते है। इन खेलों से इस त्यौहार में चार चांद लग जाता है ।

नागपंचमी –नाग पंचमी सावन के महीने में आती है जो भगवान शिव को समर्पित एक पवित्र महीना है. हिंदू शास्त्रों के अनुसार, नागों को हमेशा एक विशेष स्थान दिया जाता है और उन्हें भगवान के रूप में पूजा जाता है. नाग पंचमी के इस शुभ दिन पर भक्त भगवान के रूप में नागों, सर्पों या सांपों की पूजा करते हैं. लोग मिट्टी से सांप बनाते हैं और उन्हे अलग–अलग रूप देते हैं और उन्हें रंगते हैं, उनकी पूजा करतें है और दूध और अन्य खाद्य पदार्थ चढ़ाते हैं. कई लोग विशेष रूप से दक्षिण भारत में नागों या सांपों से जुड़े मंदिरों में जाते है और उनकी पूजा करते हैं उन मंदिरों में विशेष पूजा की जाती है और लोग इस त्योहार को बहुत भव्यता के साथ मनाते हैं. सपेरे भी सांपों को लेकर सड़कों पर निकलते हैं और उन्हें दूध और पैसे चढ़ाए जाते हैं।

हिंदू धर्म में नाग पंचमी के उत्सव से जुड़ी कई पौराणिक कथाएं है. ऐसी ही एक लोकप्रिय कहानी भगवान कृष्ण और कंस की है. चूंकि भगवान कृष्ण को कंस के अंत का कारण माना जाता था, इसलिए कंस ने भगवान कृष्ण को मारने के लिए कालिया नामक एक सांप को भेजा था. एक दिन जब भगवान कृष्ण नदी के पास अपने दोस्तों के साथ खेल रहे थे, तो उनकी गेंद पानी में गिर गई जब वह अपनी गेंद को खोजने के लिए पानी में उतरे, तो उन पर कालिया ने हमला कर दिया लेकिन अपनी विशेष शक्तियों के कारण, कृष्ण ने न केवल सांप को हराया बल्कि उस पर विजय प्राप्त की और उसके सिर पर बैठकर बांसुरी बजाई. कालिया ने बालकृष्ण से माफ़ी मांगी और वादा किया कि वह कभी भी गांव वालों को नुकसान पहुंचाने के लिए वापस नहीं आएगां यह दिन कालिया पर बालकृष्ण की जीत का प्रतीक है।

रक्षाबन्धन – भारतीय धर्म संस्कृति के अनुसार रक्षाबन्धन का त्योहार श्रावण माह की पूर्णिमा को मनाया जाता है। यह त्योहार भाई–बहन को स्नेह की डोर में बांधता है। इस दिन बहन अपने भाई के मस्तक पर टीका लगाकर रक्षा का बन्धन बांधती है, जिसे राखी कहते हैं। रक्षा बंधन के पर्व का जिक्र पौराणिक कथाओं में भी मिलता है। इस कड़ी में महाभारत काव्य के मुताबिक, एक बार भगवान श्रीकृष्ण की अगुली में चोट लगी और खून निकलने लगा। इसे देख पांचाली द्रोपदी से रहा नहीं गया और उन्होंने अपने पल्लू का कुछ भाग फाड़कर श्रीकृष्ण की अंगुली पर बांध दिया, जिससे उनका रक्तस्राव रूक गया। श्रीकृष्ण ने द्रोपदी को अपनी बहन माना और उनकी रक्षा का वचन दिया।

हलषष्ठी हलपष्ठी व्रत भाद्रमास की कृषण षष्ठी को रखा जाता है। कुछ स् थानों पर यह व्रत आज है तो कुछ माताएँ इस व्रत को कल रखेंगी। इस व्रत को करने के लिए सुबह संकल्प लिगा जाता है और फिर पूरे दिन हल से जोती गई ओर खेत में उगाई गई चीजों को नहीं खाया जाता है। माताएं अपनी संतान की दीर्घायु और खुशहाली के लिए यह व्रत करती हैं। इस व्रत को भगवान कृष्ण के बड़े भाई बलरामजी के जन्मोत्सव के रूप में रखा जाता है और अपने बच् चों की खुशहाली के लिए प्रार्थना की जाती है।

कृष्णजन्माष्टमी –जन्माष्टमी पर्व को भगवान श्रीकृष्ण के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है। यह पर्व पूरी दुनिया में पूर्ण आस्था एवं श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। जन्माष्टमी को भारत में ही नहीं, बल्कि विदेशों में बसे भारतीय भी पूरी आस्था

व उल्लास से मनाते हैं। श्रीकृष्ण युगों-युगों से हमारी आस्था के केंद्र रहे हैं। वे कभी यशोदा मैया के लाल होते हैं, तो कभी ब्रज के नटखट कान्हा।

भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव का दिन बढ़ी धूमधाम से मनाया जाता है। जन्माष्टमी पर्व भगवान श्रीकृष्ण के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है, जो रक्षाबंधन के बाद भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को मनाना जाता है।

श्रीकृष्ण देवकी और वासुदेव के 8वें पुत्र थे। मथुरा नगरी का राजा कंस था, जो कि बहुत अत्याचारी था। उनके अत्याचार दिन-प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे थे। एक समय आकाशवाणी हुई कि उसकी बहन देवकी का ब्च्चा पुत्र उसका बंच करेगा। यह सुनकर कंस ने अपनी बहन देवकी को उसके पति वासुदेवसहित काल-कौठारी में डाल दिया। केस में देवकी के कृष्ण से पहले के 7 बच्चों को मार डाला। जब देवकी ने श्रीकृष्ण को जन्म दिया, तब भगवान विष्णु ने वासुदेव को आदेश दिया कि वे श्रीकृष्ण को गोकुल में यशोदा माता और नंद बाबा के पास पहुंचा आए, जहां वह अपने मामा कंस से सुरक्षित रह सकेगा। श्रीकृष्ण का पालन-पोषण यशोदा माता और नंद बाबा की देखरेख में हुआ। बस, उनकी याद में प्रतिवर्ष जन्माष्टमी का त्यौहार मनाया जाता है।

गणेश चतुर्थी -गणेश चतुर्थी एक विशेष दिन है जब लोग भगवान गणेश के जन्म का जश्न मनाते हैं। यह भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि को होता है गणेश चतुर्थी व्रत कथा एक बार महादेव जी भोगावती नदी पर स्नान करने गए । उनके चले के बाद पार्वती माता ने अपने तन के शुद्ध व चैतनयित मल से छोटे से बालक का एक पुतला बनाया और उसमें प्राण डाले। उसका नाम 'गणेश' रखा। पार्वती माता ने उस बालक से कहा कि तुम द्वार पर बैठ जाओ और जब तक मैं नहा रही हूँ किसी को अंदर मत आने देना।''

नदी में स्नान करने के बाद जब भगवान शिव जी वहाँ पहुंचे तो गणेश जी ने उन्हें द्वार पर ही रोक लिया। शिवजी ने बहुत समझाया पर गणेश जी नहीं माने। भगवान शिव वास्तव में क्रोधित हो गए और त्रिशूल का उपयोग करके उसका सिर काट कर भीतर चले गए। बाद में जब माता पार्वती को पता चला कि क्या हुआ तो वह भी बहुत कोपित हुई।

पार्वती माता बहुत क्रोधित हुईं और उन्होंने ब्रह्मांड को नष्ट करने की धमकी दी। उन्हें शांत करने के लिए, भगवान शिव ने अपने गणों को सबसे पहले जिस जीव को देखा, उसका सिर लाने के लिए भेजा। गणों ने उत्तर दिशा की ओर लेटे हुए एक हाथी को देखा। उन्होंने हाथी के सिर को लड़के के घड़-पर प्रत्यारोपित किया और उसे पुनर्जीवित कर दिया तब शिव ने उनका नाम गणों का प्रमुख गणेश रखा।

देवताओं ने गणेश जी को तमाम शक्तियां प्रदान की और प्रथम पूज्य बनाया। यह घटना भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को हुई थी इसलिए इस तिथि को पुण्य पर्व %गणेश चतुर्थी के रूप में मनाया जाता है।

गणेश चतुर्थी के दिन यदि आप व्रत रखते हैं और गणेश जी की कोई विशेष कथा सुनते या पडते हैं तो कहा जाता है कि इससे आपके किए गए बुरे कामों से छुटकारा मिल सकता है और आपका जीवन बेहतर हो सकता है। गणेश चतुर्थी व्रत कथा व्यक्ति की मनोकामनाएं पूर्ण करने वाली और जीवन में सुख समृद्धि लाने वाली बताई गई है।

इनका प्रिय भोग मोदक है। कहते हैं कि मोदक के साथ ही साथ उन्हें मोतीचूर के लड्डू बेहद पसंद है। गणेश चतुर्थी के दिन प्रात: काल स्नानादि करके गणेश जी की प्रतिमा को सिंदूर चढ़ाकर षोडशोपचार विधि से पूजा करते है और दक्षिणा अर्पित करके 21 लड्डुओं का भोग लगाते हैं। इनमें से पाव लड्डू गणेश जी की प्रतिमा के पास रखकर शेष बाहह्मणों को दान में देते हैं। गणेश जी की पूजित प्रतिमा को फिर एक उत्तम मुहूर्त में नदी या तालाब में विसर्जित किया जाता है। इस दिन गणपति पूजन करने से बुद्धि व रिद्धि सिद्धि की प्राप्ति होती है और सभी विघ्न बाधाएँ नष्ट हो जाती है।

गोस्वामी तुलसीदास एवं राष्ट्रीय एकता

देवेश कुमार सोनी
प्राचार्य
सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सेंद्रीकोनी

निः सदेह गोस्वामी तुलसीदास प्रभू श्रीराम के अनन्य भक्त और महान कवि तो है ही वरन् आपने-अपने साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को ऐसे गतिशील किया, जिससे उस पावन अविरल धारा की बूँदे सम्पूर्ण भारत वर्ष को सिंचित कर रही है। रामचरितमानस केवल एक ग्रंथ या रचना तक ही सौमित नहीं है अपितु इससे प्राप्त प्रेरणा से हम पूरे राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधने की क्षमता रखते हैं।

प्रभु श्रीराम का चरित्र चित्रण तुलसीदास जी द्वारा हमारे लिए किया गया प्रेरणास्त्रीत् है। जिससे हमारा रोम-रोम एकजुट रहने के लिए प्रफुल्लित हो उठता है।

''हम भारत के स्वाभिमान है, ऋषि-मुनि की संतान । देश हमारा सबसे प्यारा प्यारा हिन्दुस्तान । उन्होंने रामचरित मानस के द्वारा सभी धर्म, जाति और सहक्षेत्र से परे, सभी के लिए समान प्रेम और सम्मान का संदेश दिया। उनकी रचनाएं विशेष रूप से प्रसिद्ध ग्रंथ रामचरितमानस ने भारत में राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं।

तुलसीदास की रचनाओं में राष्ट्रीय एकता का संदेश.

1. धर्मनिरपेक्षता: ''रामचरितमानस में तुलसीदास ने सभी धर्मों के लोगों के लिए सम्मान और प्रेम का संदेश दिया है। उन्होने धर्म को केवल एक बाहरी अनुष्ठान के रूप में नहीं देखा, बल्कि इसे जीवन के एक मार्ग के रूप में देखा, जो सभी के लिए समान रूप से लागू होता है।

धर्म का अर्थ केवल आध्यात्मिकता नहीं है। बल्कि यह व्यक्तिगत आचरण, सामाजिक कर्तव्य और नैतिक मूल्यों का सम्मिश्रण है। यह सत्यवादिता। न्यायप्रियता, दया, कर्तव्यनिष्ठता जैसे गुर्गो को बढ़ावा देता है।

सचिव वैद्य, गुरु तीने जो प्रिय बोलहिं भय आस, राजधर्म, तन तीनि कर होत वेग हीं नास।

अर्थः

मंत्री, वैद्य और गुरु ये तो यदि भय या लाभ की आशा से प्रिय बातें कहते है, तो राज्य, धर्म और शरीर शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।

2. जाति से परे समानता-

तुलसीदास ने अपनी रचनाओं में सभी जातियों और वर्गों के लोगों के नए समानता और सम्मान का संदेश दिया है। उन्होंने जाति-आधारित भेदभाव और सामाजिक समानता की आलोचना की।

उदा.

जंगल में रहने वाली शबरी भील जाति की स्त्री थी। जिसे सांसारिक मोहमाया और प्रपंच से क्रमशः ऊपर ठाते हुए जीवनमुक्त परमहंस अवस्था तक पहुंचाने का मार्ग स्वयं प्रभु श्रीराम ने अपने श्रीमुख से बताया।

3. क्षेत्रीय एकताः तुलसीदास ने अपनी रचनाओं में सभी क्षेत्रों के लोगों के लिए समान प्रेम और सम्मान का संदेश दिया है। उन्होंने क्षेत्रीय भाषाओं और संस्कृति को भी महत्व दिया।

तुल्ती इस संसार में, भांति-भांति के लोग। सबसे हस मिल बोलिए, नदी नाव संजोग ।

अर्थ ।

तुलसीहास जी कहते हैं कि इस संसार में तरह-तरह के लोग रहते हैं। हमें सबसे हँस कर प्रेम पूर्वक मिलना चाहिए, जिस प्रकार नाव नदी से संयोग कर के पार लगती है।

इस बात से हमें प्रेरणा मिलती है, चाहे हम किसी भी वर्ण, धर्म या जाति से क्यों ना हो। एक साथ यदि मिलाए तो प्रत्येक चुनौती पार हो जाए।

4. लोक भाषा में साहित्यः- तुलसीदास ने अवधी भाषा में लिखा, जो उस समय की लोक भाषा थी। इससे उत्तके साहित्य को व्यापक रूप से समझा गया और अधिक लोगों तक पहुंचाया जा सका, जिससे राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिला।

5. आदर्श जीवन

तुलसीदास ने अपने साहित्य मेंआदर्श जीवन जीने के तरीके को दर्शाया जो राष्ट्रीय एकता के लिए महत्वपूर्ण है। उन्होने सभी को सद्‌गुणों भौर अच्छे मूल्यों पर ध्यान कैन्द्रित करने के लिए प्रेरित किया, जिससे समाज में शांति और सद्भाव बना रहे।

6. मानवताः तुलसीदास ने अपनी रचनाओं में मानवता के प्रति प्रेम और सम्मान का संदेश दिया है। उन्होने सभी मनुष्यों को समान, रूप से मानव होने का अधिकार दिया। सभी के लिए न्याय और समानता की वकालत की।

अपनी विशाल समन्वयकारी बुद्धि का सदुपयोग कर लोकदर्शी तुलसी ने मानव में समन्वय का जो आदर्श प्रस्तुत किया। वह अविस्मरणीय है। सगुण साकार राम में गुण और रूप का, शक्ति, शील और सौन्दर्य का अनुपम सौन्दर्य का समन्वय उनकी लोक कल्याणकारी भावना का ही प्रमाण है। मध्यम वर्ग को अपनाते हुए तुलसी ने वर्णाश्रम धर्म की प्रतिष्ठा को आवश्यक मान 'केंवट प्रसंग दवारा भक्ति के क्षेत्र में ब्राह्मण और शूद्र को समान स्थान दिया।

प्रतिभाशाली कवि तुलसीदास ने भारतीय संस्कृति एवं युग जीवन का विशुद्ध प्रतिविम्व और सर्वोदय रामराज्य की स्थापना का महान संदेश अवधपति राम के माध्यम से प्रस्तुत किया।

'नहि दरिद्र कोउ दुःखी न दीना' के माध्यम से तुलसी ने रामराज्य का लोककल्याणकारी रूप वर्णित करके उसे युग–युग के लिए एक प्रेरणास्पद आदर्श बना दिया।

आध्यात्मिक संदेश और उनका प्रभाव -

तुलसी जी का यह मानना था कि अगर किसी इंसान को अपने अंदर आध्यात्मिक चेतना जगानी है तो उसे अपने इंद्रियों पर काम करना सीखना होगा, और लोक कल्याण के लिए काम करना होगा। तुलसी का यह भी मानना है कि अगर आपको अपने जीवन में मरते दम तक प्रभु के दर्शन नहीं होते हैं, तो इसका मतलब अपने जीवन में वह सिद्धि प्राप्त नहीं की है जो आपको भगवान के करीब लेकर जा सकती है।

तुलसीदास उस काल से सम्बन्ध रखते है। जो सामंती मूल्यों से ग्रस्त काल था। इस समय वर्ण व्यवस्था का कठोर प्रचलन था, और नारी की स्थिति भी अच्छी नहीं थी। कई जगह तुलसी. भी पारम्परिक मूल्यों से प्रभावित दिखते हैं। ऐसे कुछ अपवादों की छोड़ दें तो उस सामंती समाज ने तुलसी नए मूल्यों को स्थापित करने की कोशिश करते है। तुलसी भक्ति के स्तर पर वर्ण–व्यवस्था को बिल्कुल स्वीकार नहीं करते, इसलिए उन्होंने रामचरितमानस से शबूक 'वध' प्रसंग को निकाल दिया है और शबरी को भामिनि कहकर संबोधित करते हैं, वह कहते है–

नव महु एकौ जिन्ह के होई, नारि पुरुष सचराचर कोई।
मोई अतिसरा प्रिय गामिनी मोरे, सकल प्रकार अगति दृढ़ तोरे ।

यह वाक्यांश शबरी को दिए गए नौ प्रकार की भक्ति के उपदेश का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो यह दर्शाता है कि भक्ति का कोई भी रूप, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों ना हो, वह व्यक्ति को भगवान की कृपा प्राप्त करने में मदद कर सकता है।

अर्थात नौ प्रकार की भक्ति में से, जिनके पास एक भी है, वे स्त्री या पुरुष, जीवित या निर्जीव कोई भी हो, वे भगवान को अत्यन्त प्रिय होते हैं।

उपसंहार -

तुलसी ने अपने युग और भविष्य, स्वदेश और विश्व, व्यष्टि और समष्टि सभी के लिए महत्वपूर्ण सामग्री दी है। तुलसी को आधुनिक दृष्टि ही नहीं, हर युग की दृष्टि मूल्यवान मानेगी। मणि की चमक अन्दर से आती है। बाहर से नहीं।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने निराशा के अंधकार में डूबी हुई जनता को भगवान राम का लोक मंगलकारी ज्ञान प्रदान किया। उन्होंने जनता में अद्‌भुत शक्ति एवं अपूर्व आशा का संचार किया और अपनी रचना श्रीरामचरितमानस में विभिन्न मतों, धाराओं एवं संप्रदायों का समन्वय किया। इन्होने अज्ञान के अंधकार में भटकते लोगों को नई दिशा, नई गति एवं नवीन प्रेरणा दी।

गंगा की धारा

यह कल–कल छल–छल करती
क्या कहती है यह गंगा धारा ।
युग–युग से प्रवाहित अविरल ये
धरती पर पुण्य प्रवाह हमारा ।।

पाप–पुण्य के कर्म बीज की
मोक्ष– दायिनी है गंगा माता ।
सकल देवता और नर – नारी
के उर हर्षित से भाग्य विधाता।।

सदियों से धरा पर बहती आई
यह मानवता को राह दिखाई ।
गंगा मां के पावन पूजन से ही
मोक्ष –द्वार पर पग उतराई ।।

शिव– शंकर की जटा पर ही तो
माता गंगा जी शोभायमान है ।
प्रत्येक भक्त वत्सल के हृदय
में ही गंगा जी विराजमान है ।।

जब तक सूर्य– चंद्र नभ पर ही
आकाशगंगा के अनंत तारे हैं ।
पतित पावन गंगा मैया की ही
सदा जन – जन में जयकारे हैं ।।

– एम.एल. नत्थानी
रायपुर, छत्तीसगढ
मो. 9893333786

देवशयनी एकादशी प्रकृति संतुलन

साल दर साल बीतने का ही
हिसाब–किताब है देवशयनी ।
समय को मापने की ब्रम्हांड
की चक्रीय गति है देवउठनी ।।

बीता एक और आधा साल यूं
चार माह तक चतुर्मास रहेगा ।
भगवान विष्णु की योगनिद्रा से
प्रकृति संतुलन आभास रहेगा।।

जब पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती
तब दिन और रात का आधार है
प्रकृति और जीवन शैली के ही
संतुलित विकास का विहार है।।

लेकिन जब यह पृथ्वी सूर्य की
सालाना परिक्रमा पूरी करती है।
तब छह–छह महीने के दो हिस्से
उत्तरायण– दक्षिणायन बनना है

भारतीय ज्ञान परंपरा ऋतु चक्र
के साथ वैज्ञानिक मूलाधार है ।
ब्रम्हांड की अनंत आकाशगंगा
से प्रवाहित अलौकिक धार है ।।

– एम.एल. नत्थानी
रायपुर, छत्तीसगढ़
मो. 9893333786

कविता

कहां से कहां तक चली हैं ये राहें
न ढूंढा है इनको, मिली हैं ये राहें ..

कभी मन का हंसना, कभी मन का रोना,
मिला कब, जिसे हमने समझा है खोना,
उगीं ढल के, उग कर ढलीं हैं ये राहें ..

न है राग इनको, न है द्वेष थोड़ा,
न कुछ भी घटाया, न कुछ मुझमे जोड़ा,
जले पग, न लेकिन जली हैं ये राहें ..

निश्चय वाजपेयी
कोई चलता पद चिन्हों पर
कोई पद चिन्ह बनाता है ।
है वही सूरमा इस जग में
दुनिया में पूजा जाता है ।।

⊙⊙

अब आए जल देवता...

गिरीश पंकज
रायपुर छत्तीसगढ़

विहंस रही है यह धरा, गाए मंगल गान।
पावस में पहना दिए, हरियाली परिधान।।

'ऋतुओं की रानी ' हंसी, बांट रही है दान।
तुमको है शत-शत नमन, कहने लगे किसान।।

झुलस रही थी यह धरा, करती रही पुकार।
अब आए जल-देवता, लेकर अपना प्यार।।

झुलस रहे थे पेड़ सब, पशु-पक्षी नर-नार।
बादल आए बांटने, वर्षा का उपहार।।

त्राहि-त्राहि करने लगी, जब धरती की गात।
प्रेमी बादल आ गए, लेकर के बरसात।।

पावस के स्पर्श से, हुई वही इक बात।
मुस्काने फिर लग गए, मुरझाए से पात।।

हरी-भरी धरती हुई, लगे नया हर दृश्य।
अहा मेघ ले आ गए, सुंदर सुखद भविष्य।।

⊙⊙

विशिष्ट प्राचार्य प्रशिक्षण वर्ग सम्पन्न

सरस्वती शिक्षा संस्थान छ.ग. के विद्यालयों में शैक्षिक गुणवत्ता में वृद्धि एवं आधारभूत कार्यो के विस्तार को गति प्रदान करने की दृष्टि से विशिष्ट प्राचार्य नियुक्ति करने की योजना पर कार्य किया गया। इसके तहत दिनांक 3 फरवरी 2025 को विज्ञापन जारी कर आवेदन आमंत्रित किया गया। कुल 69 आवेदन प्राप्त हुए जिनमें से लिखित परीक्षा में 49 परीक्षार्थी सम्मिलित हुए जिनमें से 50 प्रतिशत अंक पाने वाले अभ्यार्थियों का साक्षात्कार हुआ। ऐसे कुल 33 अभ्यर्थी थे। लिखित परीक्षा व साक्षात्कार के अंक मिलाकर प्रावीण्यता के आधार पर 23 अभ्यार्थियों का चयन प्रशिक्षण हेतु किया गया। यह प्रशिक्षण 18 अपरैल से 16 जून 2025 तक सरस्वती शिक्षा संस्थान छ.ग. रायपुर में सम्पन्न हुआ।

वर्ग का उद्घाटन 18 अपरैल 2025 को 10 बजे डॉ. सच्चिदानंद शुक्ला कुलपति रविवि रायपुर के मुख्य आतिथ्य, एवं श्री जुड़ावन सिंह ठाकुर अध्यक्ष स.शि. संस्थान छ.ग. के अध्यक्षता में हुआ।

प्रशिक्षण में शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबंधन, नई शिक्षा नीति 2020, क्रियात्मक अनुसंधान, नवाचार, वित्तीय प्रबंधन, कम्प्यूटर शिक्षा, संस्कृत एवं अंगरेजी संभाषण, शिशुवाटिका, बालिका शिक्षा, आधारभूत विषय, संगठनात्मक ढांचा, संस्कार केन्द्र, नेतृत्व क्षमता, शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2020, बालसंरक्षण अधिकार, मूल्यांकन तथा विद्या बारती योजना के विविध विषय जैसे हमारा लक्ष्य, वंदना आदि का अभ्यास सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक रूप से कराया गया। विषय प्रस्तुति में डॉ. विसंभर प्रसाद चन्द्रा (प्राचार्य शा.उ.मा.वि. सिंगपुर) डॉ. भास्कर देवांगन, डॉ. देवकरण बोदले, डॉ. बी. रघु, श्रीमती मधु दानी, श्रीमती विद्या डांगे (एस.सी.ई.आर.टी. ओ) तथा विद्या भारती से श्री श्रीराम आरावकर, श्री भालचन्द्र रावले , श्री राकेश शर्मा, (संयोजक मानक परिषद) श्री अखिलेश मिश्र (क्षेत्रीय संगठन मंत्री मध्यक्षेत्र), श्री देवकी नंदन चौरसिया प्रशिक्षण प्रमुख (मध्यक्षेत्र), श्री विवेक शेण्ड्ये (अध्यक्ष मध्यक्षेत्र) सुश्री रेखा चूड़ासामा (संयोजक बालिका शिक्षा मध्यक्षेत्र) श्री अरुण पटेवार (प्रभारी छ.ग. प्रांत) श्री विवेक सक्सेना (प्रादेशिक सचिव छ.ग.) श्री गौरशिंकर कटकवार (प्रांत प्रमुख छ.ग.), डॉ. देवनारायण साहू (संगठन मंत्री छ.ग.) श्री रामकुमार वर्मा, श्री चन्द्रकुमार डडसेना, श्री मुखतेज बदेशा, श्री माणिक लाल साहू, श्री दिवाकर स्वर्णकार, तोरण शर्मा, श्री विभाष चौबे, श्री ... साहू, श्री विजय देवांगन श्री अश्वनी कश्यप श्री उदय रावले, (संपादक सृजन मञ्जूषा) प्रशिक्षक रहे। इसके अलावा डॉ. शैलेन्द्र सर्राफ, डॉ. स्त्री सत्यवर्धन तिवारी ने मोटिवेशनल ट्रेनिंग दी। संगीतशिक्षा अंगरेजी संभाषण हेतु क्रमशः श्री कपिलेश्वर तिवारी, श्री कैलाश सोनी एवं अलक्षेन्द्र मोगरे का सहयोग प्राप्त हुआ।

वर्ग का समापन 16 जून को श्री विवेक शेण्डेय अध्यक्ष विद्या भारती मध्यक्षेत्र, के मुख्य आतिथ्य एवं श्री रामभरोसा सोनी अध्यक्ष सरस्वती शिक्षा संस्थान छ.ग. की अध्यक्षता में हुआ। 2 माह का वर्ग आनंदमय वातावरण, उत्कृष्ट शिक्षण एवं कुशलता पूर्वक कार्य से, श्री विवेक सक्सेना के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। वर्ग में श्री लक्ष्मण राव मगर (सेवानिवृत्त सहायक संचालक) वर्ग प्रमुख एवं श्री उदय रावले वर्ग सहप्रमुख रहे। प्रशिक्षण उपरांत सभी प्रशिक्षार्थी को विभिन्न शिशु मंदिरों में प्राचार्य पद पर पदांकन आदेश दिया गया।

प्रांतीय शिशु वाटिका आचार्य सामान्य प्रशिक्षण वर्ग अकलतरा 2025

सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ रायपुर के तत्वाधान में प्रांतीय शिशुवाटिका आचार्य सामान्य प्रशिक्षण वर्ग सरस्वती शिशु मंदिर उ.मा. विद्यालय अकलतरा में दिनांक 14 मई सायं से 30 मई 2025 प्रात: तक संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम का उद्‌घाटन 15 मई प्रात: 9.00 बजे संपन्न हुआ। इस उद्‌घाटन सत्र में मुख्य अतिथि श्रीमती सुधा सिंह समाज सेविका, अध्यक्षता श्रीमती दीप्ति रोहित पटेल नगर पालिका अध्यक्षा, मुख्यवक्ता श्रीमान जुड़ावन सिंह अध्यक्ष सरस्वती शिक्षा संस्थान छ.ग. विशिष्ट अतिथि श्रीमान पुरन्दन कश्यप सचिव ग्राम भारती छत्तीसगढ़ प्रांत, श्रीमान बिहारी लाल ताम्रकार अध्यक्ष अकलतरा, एवं विद्यालय के सदस्यों के सानिध्य में संपन्न हुआ।

इस वर्ग में छत्तीसगढ़ प्रांत के 33 नगरीय विद्यालयों से 40 एवं 56 ग्रामीण विद्यालयों से 66 कुल 86 विद्यालय से 106 आचार्य बन्धु-भगिनी भाग लिए। इन विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देने हेतु श्रीमती उर्मिला कश्यप नेवरा, श्रीमती दयामती यादव शिवरीनारायण, श्रीमती लीना शुक्ला खरौद, श्रीमती उषा देवांगन चांपा, श्रीमती प्रतिभा पाण्डेय कोरबा, श्रीमती इन्दिरा पटनायक, पत्थलगांव, श्रीमती चन्द्रकांति कश्यप रायगढ़, श्रीमती ललिता शर्मा जशपुर, श्रीमती सती शुक्ला बलौदा, श्रीमती सरिता गुप्ता बलौदा, सुश्री तोमेश्वरी साहू कसेकेरा, श्री तोलाराम यादव बलौदा बाजार उपस्थित रहे।

इस प्रशिक्षण वर्ग में क्षेत्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारियों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ जो इस प्रकार है। मान. जितेन्द्र परिहार क्षेत्रीय मंत्री मध्यक्षेत्र मान. भालचन्द्र रावले सदस्य मध्यक्षेत्र, मान. अखिलेश मिश्रा क्षेत्रीय संगठन मंत्री मध्यक्षेत्र, श्रीमान प्रभात सिंह क्षेत्रीय प्रमुख श्रीमान जुड़ावन सिंह ठाकुर, अध्यक्ष स.शि.सं.छ.ग. श्रीमान डॉ. देवनारायण साहू प्रांतीय संगठन मंत्री छ.ग. प्रांत, श्रीमान विवेक सक्सेना प्रादेशिक सचिव छ.ग. प्रांत, श्रीमान लोमस राम साहू, श्रीमान बिहारीलाल ताम्रकार अध्यक्ष अकलतरा, श्रीमान ओमप्रकाश साहू कोषाध्यक्ष अकलतरा, श्रीमान कमल अग्रवाल कोषाध्यक्ष छ.ग. प्रांत, श्रीमान गौरीशंकर कटकवार प्रांत प्रमुख, श्रीमान चन्द्रकिशोर श्रीवास्तव सचिव, वनांचल शिक्षा सेवा न्यास रायपुर, श्रीमान चिंताराम साहू सहप्रांत प्रमुख ग्राम भारती, श्रीमान गेंदराम राजपूत विभाग समन्वयक बिलासपुर, श्रीमान दिवाकर स्वर्णकार खेल प्रमुख छ.ग. परांत, श्रीमान दीपक सोनी विभाग समन्वयक दुर्ग का भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

वर्ग का प्रारंभ प्रतिदिन अग्निहोत्र से होता था इस अग्निहोत्र में विद्यालय के प्राचार्य आचार्य सेवक सेविकाएं अपने परिवार सहित यजमान के रूप में आते थे। समिति के समस्त अभिभावक एवं नगर के प्रतिष्ठित व्यक्ति पूर्वछात्र सपरिवार आते थे। यहाँ प्रात: स्मरण योग, संगीत का अभ्यास किया जाता था। इसके बाद संवाद सत्र शिक्षण सत्र, निर्माण

सत्र, विमर्शसत्र, शारीरिक सत्र में व्यायाम योग, शैक्षणिक खेल, समता आदि होता था। रात्रि 7.30 बजे अभिव्यक्ति सत्र में आचार्य दीदी अपने प्रतिभाओं का प्रदर्शन करते थे।

इस वर्ग का समापन 29 मई को हुआ इस समापन सत्र में मुक्य अतिथि के रूप में श्री लक्ष्मण प्रसाद मुकीम वरिष्ठ नागरिक एवं समाज सेवक अकलतरा, अध्यक्षता श्रीमती सत्यलता आनंद प्रकाश गिरि जिला पंचायत अध्यक्ष जांजगीर एवं मुख्यवक्ता के रूप में डॉ. देवनारायण साहू प्रांतीय संगठन मंत्री, विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमान बिहारीलाल ताम्रकार अध्यक्ष अकलतरा, श्री गोपेश तुलस्यान, सहसचिव श्री ओमप्रकाश साहू कोषाध्यक्ष, दामोदर चौधरी, दशरथ नामदेव अयन जैन, रजनी साहू, लालमणी चन्द्रा प्राचार्य शिवरीनारायण, गैरराम राजपूत विभाग समन्वयक उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय प्रांतीय अतिथियों का माग4दर्शन प्राप्त हुआ।

1. मान. बालचंद जी रावले– हमारी वंदना का अर्ध एवं उद्‌देश्य पर आपका मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

2. मान. जितेन्द्र सिंह परिहार द्वारा भारतीय जीवन दर्शन पर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

3. मान. अखिलेश मिश्र जी से हमारा लक्ष्य पर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

4. मान. जुड़ावन सिंह जी प्रशिक्षण के महत्व पर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। प्रशिक्षण के तीन स्तर (1) विचारो की स्पष्टता (2) मानवीय कौशल, (3) तकनीकी कौशल।

5. मान. अ. देवनारायण जी साहू आपके मनोविज्ञान पर पंचकोशात्मक विषय पर कर्मेन्द्रिय एवं ज्ञानेन्द्रियो पर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

समापन सत्र पर अ. देवनारायण जी ने कहा – मुख्यवक्ता डॉ. देवनारायण साहू ने बताया कि सरस्वती शिशु मंदिर की स्थापना 1952 में विभाग प्रचारक नाना जी देशमुख, कृष्ण चंद गांधी और स्वयंसेवकों के प्रयास से प्रारंभ हुआ। आज पूरे भारत वर्ष में 23 हजार से भी अधिक सरस्वती शिशु मंदिर के विद्यालय नगरीय, गरामीण एकल आचार्य विद्यालय, सरस्वती संस्कार केन्द्र के माध्यम से संचालित हैं। हम छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए अन्न मय कोश, प्राण मय कोश, मनोमय कोश, विज्ञान मय कोश और आनंदमय कोष के माध्यम से करते हैं। इसके क्रियान्वयन की सार्थक योजना विद्याभारती द्वारा बनाई गई है। राष्ट्रभक्त नागरिक निर्माण करना सरस्वती शिशु मंदिर योजना का प्रमुख उद्‌देश्य है। स्वदेशी भाषा भूषा आचार विचार जीवन पद्धति अपनाकर हम सब भारत को प्रगति के शिखर पर ले जाने के लिए भारत की विश्व गुरु बनाने के लिए शिक्षा के माध्यम से प्रयत्नशील हैं।

प्रांतीय आचार्य सामान्य प्रशिक्षण वर्ग 2025

- दीपक सोनी

प्रांत प्रशिक्षण प्रमुख छ ग

सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ प्रांत की योजनानुसार प्रांत स्तरीय आचार्य सम्मान प्रशिक्षण वर्ग 13 मई से 29 मई तक सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चांपा जिला जांजगीर चांपा में आयोजित हुआ। वर्ग का शुभारंभ यज्ञ हवन से किया गया। वर्ग का उद्घाटन 14 मई को हुआ जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमान बसंत कुमार डहरिया (प्राचार्य नवीन महाविद्यालय बिरो) कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमान हनुमान कुमार देवांगन जी (अध्यक्ष सरस्वती शिशु मंदिर चांपा) ने की। मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. देवनारायण जी साहू (संगठन मंत्री विद्या भारती छत्तीसगढ़) रहे।

सामान्य प्रशिक्षण वर्ग में प्रांत के 25 जिलों के 57 विद्यालयों से 38 आचार्य एवं 65 दीदीयाँ कुल 103 शिक्षार्थी सम्मिलित हुए इस प्रशिक्षण वर्ग में शिक्षक के रूप में 19 आचार्य - दीदी प्रशिक्षक के रूप में अपने दायित्व का निर्वहन किए।

प्रतिदिन प्रात 5:00 बजे जागरण से रात्रि 10:00 बजे दीप निमिलन तक प्रातः स्मरण, वंदना अभ्यास, संवाद सत्र, शैक्षिक सत्र, विमर्श सत्र एवं सायं संघ स्थान, शारीरिक समता, शैक्षिक खेल, व्यायाम योग आदि का अभ्यास कराया गया। इसी प्रकार शिक्षार्थियों द्वारा प्रभांजलि नामक हस्तलिखित पत्रिका का निर्माण किया गया।

इस वर्ग में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सर कार्यवाह मा. रामदत्त जी चक्रधर, विद्या भारती के अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री मा. श्रीराम आरावकर जी मध्य क्षेत्र के पूर्व क्षेत्रीय संगठन मंत्री मा. भालचंद्र रावले जी, क्षेत्रीय उपाध्यक्ष मा. जुड़ावन सिंह ठाकुर जी, क्षेत्रीय संगठन मंत्री माननीय अखिलेश मिश्रा जी, क्षेत्रीय मंत्री माननीय जितेंद्र परिहार जी, क्षेत्रीय सदस्य श्री अरुण पटेवार जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांतीय समरसता प्रमुख श्रीमान विश्वनाथ भोगी जी, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक श्रीमान लोमस राम साहु जी, अखिल भारतीय वैदिक गणित के संयोजक श्री देवेंद्र राव देशमुख जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत कार्यवाह श्री चंद्रशेखर देवांगन जी, मध्य क्षेत्र के क्षेत्रीय सदस्य मा. चंद्र किशोर श्रीवास्तव जी, सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ प्रांत के प्रादेशिक सचिव मा. विवेक सक्सेना जी एवं प्रांत के सभी अधिकारियों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

समापन सत्र के प्रकट समारोह में डॉ. देवनारायण साहू जी, संगठन मंत्री विद्या भारती छत्तीसगढ़ का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

प्रांतीय आचार्य दक्षता वर्ग 2025

दीपक सोनी
प्रांत प्रशिक्षण प्रमुख छ.ग.

सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ प्रांत की योजनानुसार प्रांत स्तरीय आचार्य दक्षता वर्ग 18 मई से 29 मई तक सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चांपा जिला जांजगीर चांपा में आयोजित हुआ। वर्ग का उद्घाटन 19 मई को हुआ जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमान अमर सुल्तानिया (व्यवसायिक, समाज सेवी जांजगीर) कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमान हनुमान कुमार देवांगन जी (अध्यक्ष सरस्वती शिशु मंदिर चांपा) ने किया। मुख्य वक्ता के रूप में मा. जुड़ावन सिंह टाकुर जी (अध्यक्ष सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़), श्रीमान डॉ. शांति कुमार सोनी (व्यवस्थापक सरस्वती शिशु मंदिर चांपा) मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

इस दक्षता वर्ग में प्रांत के 21 जिलों के 54 विद्यालयों से 28 आचार्य एवं 49 दीदीयां कुल 77 शिक्षार्थी सम्मिलित हुए। इस प्रशिक्षण वर्ग में शिक्षक के रूप में 10 आचार्य/दीदी प्रशिक्षक के रूप में अपने दायित्व का निर्वहन किया।

प्रतिदिन परातः 5:00 बजे जागरण से रात्रि 10:00 बजे दीप निमिलन तक प्रातः स्मरण, वंदना अभ्यास, संवाद सत्र, शैक्षिक सत्र, विमर्श सत्र एवं स्वयं संघ स्थान शारीरिक क्षमता शैक्षिक खेल व्यायाम योग आदि का अभ्यास कराया गया। इसी प्रकार शिक्षार्थियों द्वारा सिंदूर नामक हस्तलिखित पत्रिका का निर्माण किया गया।

इस वर्ग में विद्या भारती के अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री मा. श्रीराम आरावकर जी, मध्यक्षेत्र के पूर्व क्षेत्रीय संगठन मंत्री मा. भालचंद्र रावले जी, जो क्षेत्रीय मंत्री माननीय जितेन्द्र परिहार जी क्षेत्रीय सदस्य श्री अरुण पटेवार जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांतीय समरसता प्रमुख श्रीमान विश्वनाथ भोगी जी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक श्रीमान लोमस राम साहू जी अखिल भारतीय वैदिक गणित के संयोजक श्री देवेन्द्र राव देशमुख जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत कार्यवाह श्री चंद्रशेखर देवांगन जी, मध्यक्षेत्र के क्षेत्रीय सदस्य माननीय चंद्र किशोर श्रीवास्तव जी सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ प्रांत के प्रादेशिक सचिव माननीय विवेक सक्सेना जी एवं प्रांत के सभी अधिकारियों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

समापन सत्र के प्रकट समारोह में डॉ. देवनारायण साहू जी संगठन मंत्री विद्या भारती छत्तीसगढ़ का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

समाचार

तरीघाट -अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आज सरस्वती शिशु मंदिर तरीघाट में योग दिवस मनाया गया। इस

अवसर पर गांव के सरपंच श्रीमती चंद्रिका साहू एवं प्रधानाचार्य देवनारायण साहू

समस्त आचार्य परिवार विद्यालय समिति के सदस्य एवं 290भैया-बहन योग संगम में भाग लिए।

अकलतरा -अपनी भारतीय संस्कृति को शिक्षा के माध्यम से सरस्वती शिशु मंदिर के आचार्य अपने छात्रों को प्रभावी ढंग से सिखाते हैं,भारतीय मान्यताओं,परंपराओं,जीवन मूल्यों,संस्कारों को इस विद्यालय में प्राथमिकता देकर छात्रों को सिखाया जाता है यही सरस्वती शिशु मंदिर की विशेषता है। आप सभी प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान के माध्यम से अपना और अपने छात्रों का निरंतर विकास करते रहें ऐसी मेरी शुभकामनाएं हैं। मुख्य वक्ता डॉ देवनारायण साहू जी ने बतलाया कि सरस्वती शिशु मंदिर की स्थापना 1952 में विभाग प्रचारक श्री नाना जी देशमुख ,श्री कृष्ण चंद गांधी और स्वयंसेवकों के प्रयास से प्रारंभ हुआ आज पूरे भारत वर्ष में 23 हजार से भी अधिक सरस्वती शिशु मंदिर के विद्यालय नगरीय,ग्रामीण,एकल आचार्य विद्यालय,सरस्वती संस्कार केंद्र के माध्यम से संचालित है। हम छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए अन्न मय कोश,प्राण मय कोश,मनो मय कोश, विज्ञान मय कोश और आनंदमय कोष के माध्यम से करते हैं। इसके क्रियान्वयन की सार्थक योजना विद्याभारती द्वारा बनाई गई है। राष्ट्रभक्त नागरिक निर्माण करना सरस्वती शिशु मंदिर योजना का प्रमुख उद्देश्य है।स्वदेशी भाषा,भूषा,आचार विचार ,जीवन पद्धति अपनाकर हम सब भारत को प्रगति के शिखर पर ले जाने के लिए, भारत को विश्व गुरु बनाने के लिए शिक्षा के माध्यम से प्रयत्न रत हैं। इस कार्य को आचार्य कुशलता से कर सकें इसके लिए प्रतिवर्ष शिशु वाटिका,आचार्य सामान्य प्रशिक्षण, दक्षता प्रशिक्षण आयोजित करते हैं। आप सभी आचार्य के कर्तव्यों को कुशलता से निर्वहन करते हुए विद्या भारती के लक्ष्य के अनुरूप छात्रों का निर्माण कर सकने में सफल हों ऐसी मेरी शुभकामनाएं हैं। इस प्रशिक्षण वर्ग को सफल बनाने में विद्या भारती के क्षेत्रीय,प्रांतीय,विभागीय अधिकारियों का,अकलतरा नगर के गण मान्य नागरिकों का,अभिभावक बंधु-भगिनियों का,प्रशिक्षण प्राप्त करने आए शिक्षार्थियों,शिक्षकों,विद्यालय प्रबंध समिति पदाधिकारियों,सदस्यों, प्राचार्य, आचार्य कर्मचारी परिवार सहित जिन महानुभावों का प्रत्यक्ष या परोक्ष सहयोग प्राप्त हुआ उनके प्रति आभार विद्यालय के सह सचिव श्री गोपेश तुलस्यान ने व्यक्त किया। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस गरिमामय समापन कार्यक्रम में श्री आनंद प्रकाश मिरि,श्री दामोदर चौधरी,श्री दशरथ नामदेव,श्री अयन जैन,श्री मती रजनी साहू उपाध्यक्ष,श्री लालमणि चंद्रा प्राचार्य शिवरीनारायण,श्री गेंद राम राजपूत विभाग समन्वयक बिलासपुर,श्री दीपक सोनी विभाग समन्वयक कोरबा,श्री सुबोध थवाईत पत्रकार,श्री रामकुमार वर्मा शिशु वाटिका प्रांत प्रमुख सहित गण मान्य नागरिक सरस्वती शिशु मंदिर अकलतरा के आचार्य कर्मचारी परिवार उपस्थित रहे।

सरसींवा -मारवाड़ी युवा मंच के तत्वावधान में एवं सरस्वती शिशु मंदिर सरसींवा आचार्य परिवार के सहयोग से निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन श्री रमेश जालान जी अध्यक्ष सरस्वती शिशु मंदिर सरसीवा एवं आदरणीय श्री अमित अग्रवाल शिशु रोग विशेषज्ञ बसना द्वारा मां सरस्वती ,मां भारती एव ओम की छायाचित्र पर दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ हुआ ।इस शिविर में 12 डॉक्टर सर्जन सम्मिलित हुए थे, जिसमें से

207 मरीजों का निशुल्क उपचार हुआ । इस उपचार से क्षेत्रवासियों के मरीजों में काफी उत्साह देखने को मिला और सभी ने भूरी-भूरी प्रशंसा की। सभी आचार्य परिवार बड़ी प्रसन्नता के साथ इस सेवा कार्य में अपना सहयोग प्रदान किया है। अध्यक्ष महोदय जी ने सभी आचार्य एवं कर्मचारियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

दुर्ग! विद्या भारती सरस्वती शिक्षा संस्थान के अंतर्गत विद्वत परिषद दुर्ग विभाग द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा एक अनमोल विरासत विषय पर विमर्श कार्यक्रम दुर्ग के साइंस कॉलेज राधाकृष्णन हाल में आयोजित किया गया। जिसमें प्रमुख वक्ता देश के जाने-माने शिक्षाविद् एवं विचारक श्री अवनीश भटनागर जी उपस्थित रहे।

विद्या भारती के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष का दायित्व निर्वहन करने वाले श्री अवनीश भटनागर जी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि अपनी कुल परंपराओं का निर्वहन करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है यह हमारी विरासत है, किसी भी ग्रंथ में उल्लेख न होने पर भी परंपराओं को निभाना भारतीय ज्ञान परंपरा है। भारत की संस्कृति - भारत की शिक्षा प्राचीन वेद उपनिषद पुराण स्मृतियों में वर्णित है जिसका आश्रय लेकर भारतीय समाज सशक्त व सबल होता है, अपनी इन्हीं विरासतों के कारण ही भारत विश्व गुरु के रूप में पहचाना जाता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे हेमचंद यादव विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. संजय तिवारी ने कहा कि विमर्श शिक्षा जगत में एक अनूठी पहल है तथा भारतीय ज्ञान परंपरा पर चिंतन समाज को नई दिशा प्रदान करेगा।

कार्यक्रम में विद्या भारती के प्रादेशिक सचिव लक्ष्मण राव मगर तथा विद्वत परिषद छत्तीसगढ़ प्रांत संयोजक डॉ सुभाष चंद्राकर मंचासीन थे।

कार्यक्रम में अतिथि परिचय विद्वत परिषद दुर्ग विभाग के प्रमुख डॉ. नीलेश शर्मा ने कराया, प्रस्तावना डॉ. सुभाष चंद्राकर ने किया।

उच्च शिक्षा विभाग के क्षेत्रीय संचालक डॉ. राजेश पांडे एवं विज्ञान महाविद्यालय दुर्ग के प्राचार्य डॉ. अजय सिंह ने शॉल श्रीफल व पुष्पगुच्छ भेंट कर किया।

विमर्श कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ के शिक्षा जगत के वरिष्ठ अधिकारी, विद्या भारती के कार्यकर्ता, विभिन्न कॉलेज के प्राचार्य एवं प्राध्यापक ,सरस्वती शिशु मंदिर के आचार्यगण एवं समाज के प्रबुद्ध व गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम में विशेष रूप से जुड़ावन सिंह ठाकुरजी ,विवेक सक्सेनाजी, दुर्गेश नंदिनी परिहार, राघवेंद्र मिश्रा, चिरंजीव जैन जी, डॉ. मनोज दानी, श्री सुरेंद्र कौशिक,श्री दीपक सोनी , श्री दीपक यादव , श्री शत्रुघ्न देवांगन, श्री हरिश्चंद्र साहू , श्री पूनम चंद जैन सहित नगर के लगभग 300 प्रबुद्ध जन उपस्थित थे।

मंच संचालन डॉ. ज्योति धारकर तथा धन्यवाद ज्ञापन विद्वत परिषद के दुर्ग जिला प्रमुख एवं उतई महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. पंकज सोनी ने किया।

रायपुर- वनांचल शिक्षा सेवा न्यास छ. ग. रायपुर जन जाति क्षेत्र की शिक्षा के तत्वावधान में आज दिनांक 30/06/

2025 दिन सोमवार को शाम पांच बजे सरस्वती शिक्षा केंद्र पुनारकसा संकुल डौंडीलोहारा जिला बालोद केंद्र उद्घाटन समारोह में उपस्थित ग्राम पटेल श्री पुराणिक लाल चुरेंद्र वार्ड पंच श्री कार्तिक राम, श्री सुखेंद्र कुमार, श्री तुरण लाल, श्री बृजलाल, पूषण लाल ,श्री जीवन लाल, संकुल समन्वयक

अमीर दास कृषाणे, आचार्य तुलेश कुमार, आचार्य दीदी कुमारी हर्षिका साहु एवं 25 भैय्या-बहनों की उपस्थिति में मां सरस्वती की पूजा अर्चना कर सरस्वती शिक्षा केंद्र का उद्घाटन सम्पन्न हुआ।

छत्तीसगढ़- को सरस्वती शिक्षण संस्थान छत्तीसगढ़ प्रांत की प्रांतीय समिति की योजना अनुसार कक्षा दशम में छत्तीसगढ़ टॉप 10 की सूची में स्थान प्राप्त करने वाले सरस्वती शिशु मंदिर विद्यालय के बच्चों को महामहिम राज्यपाल महोदय के कर कमलों द्वारा स्मृति चिन्ह प्रशस्ति पत्र एवं 5000 राशि उपहार स्वरूप प्रदान की गई।

बलरामपुर । वनांचल शिक्षा सेवा न्यास छत्तीसगढ़ रायपुर द्वारा संचालित मरस्वती शिक्षा केंद्र जनजातीय क्षेत्र के बलरामपुर एवं वाड्रफनगर संकुल का तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ। यह प्रशिक्षण शैक्षणिक गुणवत्ता, सांस्कृतिक मूल्यों और राष्ट्रीय चरित्र निर्माण के उद्देश्य से आयोजित किया गया था। उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि कोद् गम द्विवेदी (जिला प्रतिनिधि, सरस्वती शिक्षा संस्थान रायपुर), नगर संघ चालक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ बलरामपुर, गोपाल कृष्ण मिश्रा (जिला प्रभारी, सरस्वती शिक्षा केंद्र), वंशीधर गुप्ता (व्यवस्थापक, सरस्वती शिशु मंदिर बलरामपुर), बिहारी पाल (कोषाध्यक्ष) विनय कुमार पाठक (प्रधानाचार्य), नरेश लकड़ा (जिला समन्वयक, सरगुजा), दिलोप गुप्ता (संकुल समन्वयक) सहित सभी आचार्य-दीदी भैयाओं ने उपस्थित दर्ज करवाई। समापन समारोह में नगर पालिका अध्यक्ष लोधी राम एक्का मुख्य अतिथि रहे। साथ ही कोद राम द्विवेदी, गोपाल कृष्ण मिश्रा, बिहारी पाल, शम्भुनाथ मिश्रा, विनय कुमार पाठक, नरेश लकड़ा व दिलीप गुप्ता मंचासीन रहे।

खैरागढ़ -पत्रिका. वनांचल शिक्षा मेवा न्यास द्वारा संचालित सरस्वती शिक्षा केंद्र खैरागढ़, राजनांदगाव के संकुल खैरागढ़, छुईखदान, डोगरगढ मे नवीन एव पुराने आचार्यों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग सरस्वती शिशु मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय में प्रारंभ हुआ जिसमें 39 शिक्षिकाओं, 09 शिक्षको सहित कुल 48 शिक्षक सम्मिलित हुए। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि खम्हन ताम्रकार अध्यक्षता दिनेश वर्मा जिला पंचायत सदस्य, मुख्य वक्ता राजू लाल यादव विशिष्ट अतिथि गोरेलाल वर्मा थे।

प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित करते खम्हन ताम्रकार ने कहा कि आज जिस तरह अपने संस्कृति को बचाने की चुनौती है इस समय आप सबने चुनौती को अवसर में बदलने के लिए वनांचल क्षेत्रों में कार्य करने के लिए आपने कदम उठाया है वह सराहनीय है।

मुख्यवक्ता राजलाल यादव ने कहा कि महापुरुष लोगों की आजादी में किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका रही है, उसी प्रकार आज हमारी भूमिका समाज को शिक्षित करने में रहना चाहिए स्वास्थ्य को लेकर लोगों को सजग रहने की आवश्यकता है। रात्रि में भारत माता की आरती में राजेश मिश्रा, निक्कू श्रीवास उपस्थित रहे इम वर्ग में प्रातः जागरण सें रात्रि 10 बजे तक विभिन्न कालखंड हुए।

प्रार्थना, शारीरिक खेलकूद, गीत, कहानी, बौद्धिक विकास जैसे विषय थे। सरस्वती शिक्षा केंद्र वनवासी क्षेत्र के बच्चों को नि शुल्क कला संस्कृति खेलकूद व शैक्षणिक विकास के लिए केंद्र सन्चालित कर रही है।

डॉण्डीलोहारा- वनांचल ग्राम पुनारकसा में वनांचल शिक्षा सेवा न्यास छत्तीसगढ़ रायपुर जनजाति क्षेत्र की शिक्षा के तत्वाधान में सोमवार को शाम 5 बजे मां सरस्वती की पूजा अर्चना कर सरस्वती शिक्षा केंद्र का उद्घाटन संपन्न किया गया। इस कार्यक्रम में पुराणिक लाल ग्राम पटेल, कार्तिक राम वार्ड पंच, सुखंद्र कुमार, तोरण लाल, बृजलाल, पुष्ण लाल जीवन लाल तथा अमीर दास कृपण संकुल समन्वय तुलेश कुमा आचार्य, दीपका साहू आचार्य एक 25 छात्र छात्राओं की उपस्थिति में कार्यक्रम संपन्न हुआ।

एमसीबी / सरभोका - विद्या भारती छत्तीसगढ़ प्रांत के मार्गदर्शन एवं वनांचल शिक्षा सेवा न्यास छत्तीसगढ़ की योजनानुसार जनजाति क्षेत्र में चलने वाले सरस्वती शिक्षा केंद्रों (एकल आचार्य) के नवीन आचार्यों का 10 दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग सरस्वती शिशु मंदिर सरभोका जिला मनेद्रगढ़-चिरमिरी-

भरतपुर में दिनांक 30 मई सायं से 10 जून 2025 प्रातः तक आयोजित हुआ।

आज विधिवत्त उद्घाटन सत्र में छत्तीसगढ़ शासन के कैबिनेट मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल जी (मंत्री- लोक स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, चिकित्सा शिक्षा, बीस सूत्रीय कार्यान्वयन) के मुख्य अतिथि में एव नीरज अग्रवाल जी की अध्यक्षता और चंद्र किशोर श्रीवास्तव जी एवं प्रणव चक्रवर्ती जी की विशिष्ट आतिथ्य एवं नर्मदा प्रसाद राय वर्गाधिकारी के सानिध्य में संपन्न हुआ कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती, मा भारती एवं ओम के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर, दीप मत्रो के साथ प्रारंभ हुआ। अतिथियों का परिचय एव स्वागत नरेश जायसवाल (प्रांत प्रमुख जनजाति क्षेत्र की शिक्षा) द्वारा किया गया अतिथियों को तिलक, श्रीफल एवं अंग वस्त्र से प्रकल्प के सचिव श्री कलेश्वर पेकरा एवं प्राचार्य धर्मेंद्र पांडे द्वारा सम्मान किया गया। हमारा लक्ष्य श्बीर सिंह राठिया ने प्रस्तुत किया किशोर श्रीवास्तव जी द्वारा वर्ग का उद्देश्य एवं स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया। सामूहिक गीत, सुभाषित एवं एकल गीत के पश्चात मुख्य अतिथि माननीय श्याम बिहारी जायसवाल जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। अध्यक्षीय आशीर्वचन नीरज अग्रवाल (उपाध्यक्ष सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़) का प्राप्त हुआ। आभार प्रदर्शन श्री कलेश्वर पैकरा सचिव सरभोका द्वारा किया गया। इस 10 दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग में पूरे प्रांत से 110 प्रशिक्षणार्थी एवं 20 शिक्षक व्यवस्था में कार्यकर्ता लगे हुए है। प्रांतीय आचार्य प्रशिक्षण वर्ग को सफल बनाने के लिए श्री प्रणव चक्रवर्ती, ललितेश कुमार, श्री कलेवर पैकरा, श्री हनुमान अग्रवाल, सहित समिति के सभी सदस्य लगे हुए है। विद्यालय परिवार ये धर्मेंद्र पांडे (प्राचार्य), मोतीलाल सिंह, एवं सभी आचार्य कर्मचारी तन-मन से सेवा में लगे हुए है जायसवाल के मार्गदर्शन में तिलक राम नामदेव, राम यादव, भरत लाल राडिया, भुवनेश्वर कुलदीप, पूषण लाल भुआर्य, नरेश लाकडा, सहित सभी संकुल समन्वयक प्रशिक्षण देने में लगे हुए हैं। प्रतिदिन प्रात 4ः30 बजे से रात्रि 10ः00 बजे तक अनेक कॉलखण्डों के माध्यम से यह प्रशिक्षण सपन्न होने वाला इस प्रशिक्षण वर्ग में प्रातीय अधिकारियों के साथ-साथ क्षेत्र के विभिन पदाधिकारी सहित गणमान्य नागरिकों का मार्गदर्शन प्राप्त होने वाला है बौद्धिक, शारीरिक एव गीत, नृत्य के माध्यम से सभी को प्रशिक्षित किया जा रहा है।

भर्रीटोला -सरस्वती शिक्षा केंद्र ग्राम -भर्रीटोला में गुरु पूजन करवाया गया जिसमें आचार्य भूपेन्द्र कुमार, लेखराम साहू शिक्षा प्रभारी, झूमक लाल परसाई पूर्व सरपंच पंचायत कु. दल्ली तथा गायत्री परिवार के परिजन श्री. कोमल साहू, शिवप्रसाद, नवेंद कुमार कारते, झूमक लाल परसाई, हेमसाय फाफरे, महेश कुमार साहू, मनोज कुमार साहू, रामविलास

साहू, गैजेंद्र देवांगन, रोहिदास फाफरे । मुख्य जजमान श्री. लेखराम साहू एवं श्रीमती रेशमी बाई साहू तथा स्कूल के छात्र एवं छात्रा के साथ अन्य सज्जन के साथ गुरु पूजन का आयोजन किया गया

संकुल दुर्गुकोंडल के आश्रित ग्राम हामतवाही में सरस्वती शिक्षा केंद्र का शुभारंभ किया गया जिसमें ग्राम सरपंचश्री कुबेर दरों ग्राम पटेल शोभा राम संकुल समन्वयक

सुरजू राम कोमरे व ग्रामवासी, छोटे बच्चों के समक्ष मां सरस्वती की पूजा अर्चना कर केंद्र प्रारंभ किया गया।

खरोरा - सरस्वती शिशु मंदिर खरोरा में गुरु पूर्णिमा

के पावन अवसर पर भैया बहनों द्वारा एक पेड़ मां के नाम पर वृक्षारोपण।

तरीघाट –गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर सरस्वती

शिशु मंदिर तरीघाट में हर्ष उल्लास के साथ गुरु पूर्णिमा मनाया गए जिसमें गुरु की महत्व हमारे जीवन में कितना महत्वपूर्ण है भैया–बहनों को बताया गया।

गुरु पांच प्रकार के होते हैं
पहले गुरु हमें जन्म देने वाली माता
दूसरा गुरु धरती माता
तीसरा गुरु पिता हमें उंगली पड़कर चलने सीखाने वाला
चौथा गुरु हमारे आचार्य शिक्षक ज्ञानार्जन कराने वाले
पांचवा गुरु आध्यात्मिक गुरु हमें अध्यात्म एवं हमारे संस्कृति का ज्ञान कराने वाला।

सर्वप्रथम भारत माता के छायाचित्र एवं परम पवित्र भागवत ध्वज को गुरु का प्रतीक मानकर पूजन अर्चन कर मां सरस्वती की वंदना की गई फिर अतिथियों द्वारा गुरु की महिमा एवं हमारी पौराणिक कथाएं के माध्यम से बच्चों को बताया गया जिसमें भगवान राम–कृष्ण ने भी अपने जीवन में गुरु बनाये थे एवं गुरु के बताए हुए रास्ते पर आगे बढ़े। तत्पश्चात समिति के द्वारा विद्यालय के आचार्य को पेन डायरी देकर सम्मानित किया गया एवं भैया–बहनों ने भी एक दूसरे को बधाई संदेश देते हुए शुभकामनाएं संप्रेषित किये। इस अवसर पर विद्यालय के संयोजक श्री जयराम सिन्हा जी गांव के सरपंच श्रीमती चंद्रिका साहू जी एवं समिति सदस्य छगनलाल साहू विद्यालय प्रधानाचार्य देवनारायण साहू, पालक गण एवं समस्त आचार्य परिवार उपस्थित रहे।

सरभोका – गुरुपूर्णिमा का उत्सव सरभोका स. शि.

म. में बड़े धुम धाम से मनाया गया।

वाड्रफनगर– सरस्वती शिशु मंदिर वाड्रफनगर में महर्षि

वेदव्यास जी के जन्मदिन के पावन अवसर पर गुरु पूर्णिमा उत्सव का आयोजन भैया–बहनों के द्वारा किया गया कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सेवा निवृत्त प्राचार्य श्री लंकेश पाण्डेय जी रहे।

पाली– सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पाली में आज महर्षि वेदव्यास जी की जन्म जयंती

पर गुरु पूर्णिमा पर्व मनाया गया जिसमें शक्ति दाई शिक्षण समिति के सम्माननीय सदस्य श्री शिवकुमार चौहान जी की उपस्थिति ,प्राचार्य चूड़ामणि साहू एवं आचार्य परिवार एवं भैया-बहनों के साथ मनाया गया जिसमें बच्चों द्वारा गुरु की महिमा का बखान किया गया जिसमें बहन यलिनी साहू,शुभी डिक्सेना,राम सिंह राजपूत, ईशिका सोनी ,कार्यक्रम के अंत में श्री चौहान भैया जी द्वारा बच्चों को बहुत सुंदर गुरु की भक्ति का पाठ पढ़ाया गया तथा बच्चों को माता-पिता व गुरुओं की सदैव सम्मान करने के लिए बच्चों को प्रेरित किया।

छत्तीसगढ़ के सारंगढ़-बिलाईगढ़ जिले के बरमकेला ब्लाक अंतर्गत सरस्वती शिशु मंदिर लेन्धरा में गुरु पूर्णिमा पर्व पर आयोजित गुरु पूजन समारोह में शिक्षा, संस्कृति और श्रद्धा का सुंदर संगम देखने को मिला।

संस्कारों की नींव सरस्वती शिशु मंदिर में पड़ी

गुरुजनों का गणवेश पहनाकर हुआ सम्मान-

कार्यक्रम की शुरुआत हिंदू परंपरा के अनुसार प्रथम गुरु वेदव्यास की विधिवत पूजा से की गई। मंच पर उपस्थित सभी अतिथियों का तिलक लगाकर सम्मानपूर्वक स्वागत किया गया। विद्यालय अध्यक्ष भूतनाथ पटेल ने अपने उद्बोधन में कहा कि, 'इस संसार में गुरु ही वह शक्ति है जो अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाती है। आप सभी सौभाग्यशाली हैं जिन्हें इस जीवन में गुरु बनने का अवसर मिला है।' उन्होंने गुरु की महिमा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि समाज में गुरु का स्थान सर्वोच्च होता है।

संस्कारों की नींव सरस्वती शिशु मंदिर में पड़ी

गुरु पूर्णिमा कार्यक्रम की मुख्य अतिथि जिला पंचायत सदस्य डा. अभिलाषा नायक ने अपने उद्बोधन में कहा कि उन्होंने भी अपनी प्रारंभिक शिक्षा सरस्वती शिशु मंदिर से प्राप्त की है। उन्होंने कहा, ''शिक्षा तो हर स्कूल में मिलती है, लेकिन जो संस्कार मुझे सरस्वती शिशु मंदिर से मिले, वही आज मुझे परिवार और समाज में अपने दायित्व निभाने की ताकत देते हैं।'' उनके वक्तव्य ने पूरे परिसर में भावनात्मक ऊर्जा भर दी।

गुरुजनों का गणवेश भेंटकर हुआ सम्मान

लेंधरा-कार्यक्रम के दौरान विद्यालय की ओर से सभी आचार्यों और दीदियों को गणवेश भेंट कर सम्मानित किया गया। मंच पर लेन्धरा मंडल अध्यक्ष शारदा शोभाचंद मालाकार ने भी अपने विचार साझा करते हुए कहा कि, ''आज गुरुजनों का सम्मान कर खुद को गौरवांवित महसूस कर रही हूं। गुरु हमारे जीवन के प्रेरणास्त्रोत होते हैं।''

कार्यक्रम का संचालन आचार्य नरेश डनसेना ने भावपूर्ण अंदाज में किया, जबकि आभार प्रदर्शन विद्यालय प्राचार्य संजय साहू द्वारा किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के आचार्य चूड़ामणि मालाकार, लिंगराज नायक और दीदियों में लक्ष्मी यादव, बबली पाणीग्राही, योगेश्वरी डनसेना, अंजली भोय, लक्ष्मीन यादव, पुष्पांजलि कर्ष, खीरमती प्रधान और बासना सेठ सहित अनेक शिक्षकगण व गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

तागा -सरस्वती शिशु मंदिर उच्च माध्य विद्या तागा में गुरुपूर्णिमा के अवसर पर विद्यालय में गुरु पूजन का एवम

विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें अरुण से द्वादश के भैया-बहनों द्वारा गुरु के सम्मान में भाषण गीत वा श्लोक आदि प्रस्तुत किया गया । कार्यक्रम के भूख्य अतिथि श्रीरामविलाश कश्यप जी उपाध्यक्ष केशवा शिक्षण समिति तागा रहे जिनका प्रेरणा उद्बोधन प्राप्त हुआ । श्री सरोज यादव प्राचार्य सरस्वती शिशु मंदिर तागा ने भैया बहनों को पीपल लगाने 1 विभिन्न बाल अपराध के सतर्कता के विषय पर बात की । प्र प्राचार्य कैलाश चौबे ने पौराणिक उदाहरण से भैया - बहनों को गुरु की कृपा से कैसे हम सफलता एवं सिद्धि प्राप्त कर सकते है । किस प्रकार अपनी झिझक दूर करके प्रभावी व्यक्तित्व बना सकते है इसकी चर्चा की । कार्यक्रम में विद्यालय के समस्त दीदी आचार्यों के साथ सभी कक्षाओं के भैया-बहन उपस्थित रहे ।

पाली- सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पाली में आज महर्षि वेदव्यास जी की जन्म जयंती

पर गुरु पूर्णिमा पर्व मनाया गया जिसमें शक्ति दाई शिक्षण समिति के सम्माननीय सदस्य श्री शिवकुमार चौहान जी की उपस्थिति ,प्राचार्य चूड़ामणि साहू एवं आचार्य परिवार एवं भैया बहनों के साथ मनाया गया जिसमें बच्चों द्वारा गुरु की महिमा का बखान किया गया जिसमें बहन यलिनी साहू,शुभी डिक्सेना,राम सिंह राजपूत, ईशिका सोनी ,कार्यक्रम के अंत में श्री चौहान भैया जी द्वारा बच्चों को बहुत सुंदर गुरु की भक्ति का पाठ पढ़ाया गया तथा बच्चों को माता-पिता व गुरुओं की सदैव सम्मान करने के लिए बच्चों को प्रेरित किया

बाराद्वार - सरस्वती शिशु मंदिर उच्च.माध्य. विद्यालय बाराद्वार में 12 जुलाई 2025 को भारत माता की आरती में नगर पंचायत बाराद्वार के अध्यक्ष श्री नारायण प्रसाद कुर्रे जी एवं विद्यालय के अध्यक्ष घासीराम बंसल एवं कमलेश चंद शर्मा जी शामिल हुए। सरस्वती शिशु मंदिर बाराद्वार में विगत कई वर्षो से प्रत्येक शनिवार को भारत माता की आरती हो रही

है, जिसमें नगर एवं गांवों से गणमान्य नागरिकों को आमंत्रित कर शामिल कराया जाता है।

भारत माता आरती कार्यक्रम पश्चात् विद्यालय में शाला प्रवेश उत्सव का कार्यकरम संपन्न हुआ। नगर पंचायत अध्यक्ष श्री नारायण प्रसाद कुर्रे जी का शाल व श्रीफल प्रदान कर एवं तिलक लगाकर विद्यालय के अध्यक्ष श्री घासीराम बंसल द्वारा सम्मानित किया गया।

तत्पश्चात् नगर पंचायत अध्यक्ष द्वारा नव प्रवेशी भैया-

बहिनों को तिलक लगाकर एवं पाठ्यपुस्तक प्रदान कर शाला प्रवेश कराया गया।

कैलाश नगर भिलाई–गुरु पूर्णिमा पर्व पर महर्षि दयानंद सरस्वती शिशु मंदिर के शिक्षकों को किया गया सम्मानित गुरु

पूर्णिमा पर्व पर महर्षि दयानंद सरस्वती शिशु मंदिर के शिक्षकों को किया गया सम्मानित भिलाई–महर्षि दयानंद सरस्वती शिशु मंदिर कैलाश नगर में दिनांक 10 जुलाई 2025,दिन गुरुवार को गुरु पूर्णिमा का पर्व हर्षोल्लास से मनाया गया.कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती एवं भारतमाता के तैल चित्र पर माल्यार्पण व दीपप्रज्वलन के साथ हुआ.इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित समिति के सचिव विजय चौधरी ने अपने उद्बोधन में सनातन काल से चली आ रही गुरु–शिष्य परम्परा के बारे में बताया एवं गुरु पूर्णिमा पर्व के महत्त्व पर प्रकाश डाला.अजय केडिया ने भी अपने उद्बोधन में गुरु–शिष्य परम्परा की महत्ता के बारे में बताया.

गुरु पूर्णिमा पर्व पर अतिथियों द्वारा शिक्षकों को उपहार देकर सम्मानित किया गया.इस अवसर पर रामजी साहू,शम्भुनाथ साहा,दिनेश पुरवार,श्रीमती मिटठू चंदा,श्रीमती शैल तिवारी,सुश्री गुंजा बया आदि सहित शाला के शिक्षकगण उपस्थित थे.कार्यक्रम का संचालन कुशी शर्मा द्वारा किया गया एवं आभार प्रदर्शन प्राचार्य सुश्री गुंजा बया द्वारा किया गया.

नैला– गुरु परंपरा की गौरवगाथा को स्मरण करते हुए सरस्वती शिशु मंदिर नैला में महर्षि वेदव्यास जयंती को गुरु पूर्णिमा के रूप मनाया गया। विद्यार्थियों सहित समस्त विद्यालय परिवार ने श्रद्धाभाव से सहभागिता निभाई। दीप प्रज्वलन से हुआ शुभारंभ कार्यक्रम की शुरुआत महर्षि वेदव्यास, मां सरस्वती, भारत माता और ॐ प्रतीक के समक्ष दीप प्रज्वलन के साथ हुई। सभाकक्ष में दीप प्रज्वलन के लिए मंच पर संतोष दुबे सेवा निवृत्त प्राचार्य, विशिष्ट प्राचार्य श्रीमती बबीता वर्मा, प्रधानाचार्य भगवानदास वैष्णव, वरिष्ठ आचार्य शैलेश कुमार विश्वकर्मा, आचार्य जगदीश प्रसाद पांडेय एवं आचार्य दिलीप कुमार शराफ उपस्थित थे। श्री दुबे ने कहा कि गुरु अंधकार (अज्ञानता) से प्रकाश (ज्ञान) की ओर ले जाता है। गुरु के प्रकार के बारे कहा कि गुरु पांच प्रकार के होते है, प्रथम गुरु माता, द्वितीय गुरु मातृभूमि, तृतीय गुरु पिता, चतुर्थ गुरु शिक्षक, पंचम गुरु आध्यात्मिक गुरु। इस अवसर पर छात्र–छात्राओं द्वारा गीत, कविता, भाषण एवं भजन की प्रस्तुति दी गई। तत्पश्चात विद्यालय परिसर में वीणापाणि शिक्षण समिति के सचिव मन्मथनाथ शर्मा, आचार्य आचार्या सहित छात्र–छात्राओं ने विद्यालय परिसर में पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से लगभग 200 पौधे लगाए। उक्त कार्यक्रम की वीणापाणि शिक्षण समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने सराहना की।

महासमुंद– स्थानीय भलेसर मार्ग स्थित सरस्वती शिशु मंदिर उ. मा. विद्यालय में शिशु भारती, बालभारती, कन्या भारती, एवं किशोर भारती का गठन किया गया। सभी पदाधिकारी को प्राचार्य देवराज वर्मा द्वारा वर्षभर विद्यालय की व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए एवं निष्ठा पूर्वक अपने दायित्वों का निर्वहन करने के लिए शपथ दिलाई गई। जिसमें किशोर भारती से अध्यक्ष,–भावेश साहू, उपाध्यक्ष खेमचंद साहू, सचिव हर्ष देव, सह सचिव अक्षत जलक्षत्री, सेनापति युवराज साहू, उप सेनापति निहाल पटेल को दायित्व सौंपा गया। इसी प्रकार कन्या भारती से अध्यक्ष कु. योगिता साहू, उपाध्यक्ष कु. खुशी निषाद, सचिव कु. विधि साहू, सह सचिव कु. जिया वर्मा, सेनापति कु. टिकेश्वरी साहू, उप सेनापति कु. जीविका देवांगन। बालभारती से अध्यक्ष कु. निधि जलक्षत्री, उपाध्यक्ष अंश कुमार साहू, सचिव कु. दोनिशा साहू, सह सचिव भिमेश कुमार सेन, सेनापति चिराग साहू, उप सेनापति– धर्मवीर नेताम। शिशु भारती से अध्यक्ष शुभम महानंद, उपाध्यक्ष खोमेश ठाकुर, सचिव दिव्यांश साहू, सह सचिव अंजली मधुकर, सेनापति वैभव साहू, उप सेनापति भेखराम साहू को बनाया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ आचार्या श्रीमती मनोज साहू, वरिष्ठ आचार्य एवं बालभारती प्रमुख बलराम सेन, वरिष्ठ आचार्य शिवकुमार कन्नौजे, किशोर भारती प्रमुख आचार्य तुलसीराम पटेल, कन्या भारती प्रमुखश्रीमती दुर्गेश नंदिनी चंद्राकर, सुश्री सरोजनी साव, शिशु भारती प्रमुख श्रीमती किरण सोनी, दीदी, आचार्य उपस्थित थे।

दुर्ग! विद्या भारती सरस्वती शिक्षा संस्थान के अंतर्गत विद्वत परिषद दुर्ग विभाग द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा एक अनमोल विरासत विषय पर विमर्श कार्यक्रम दुर्ग के साइंस कॉलेज राधाकृष्णन हाल में आयोजित किया गया। जिसमें प्रमुख वक्ता देश के जाने-माने शिक्षाविद एवं विचारक श्री अवनीश भटनागर जी उपस्थित रहे।

विद्या भारती के राष्टीय उपाध्यक्ष का दायित्व निर्वहन करने वाले श्री अवनीश भटनागर जी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि अपनी कुल परंपराओं का निर्वहन करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है यह हमारी विरासत है, किसी भी ग्रंथ में उल्लेख न होने पर भी परंपराओं को निभाना भारतीय ज्ञान परंपरा है। भारत की संस्कृति - भारत की शिक्षा प्राचीन वेद उपनिषद पुराण स्मृतियों में वर्णित है जिसका आश्रय लेकर भारतीय समाज सशक्त व सबल होता है, अपनी इन्हीं विरासतों के कारण ही भारत विश्व गुरु के रूप में पहचाना जाता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे हेमचंद यादव विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. संजय तिवारी ने कहा की विमर्श शिक्षा जगत में एक अनूठी पहल है तथा भारतीय ज्ञान परंपरा पर चिंतन समाज को नई दिशा प्रदान करेगा।

कार्यक्रम में विद्या भारती के प्रादेशिक सचिव लक्ष्मण राव मगर तथा विद्वत परिषद छत्तीसगढ़ प्रांत संयोजक डॉ सुभाष चंद्राकर मंचासीन थे।

कार्यक्रम में अतिथि परिचय विद्वत परिषद दुर्ग विभाग के प्रमुख डॉ. नीलेश शर्मा ने कराया, प्रस्तावना डॉ. सुभाष चंद्राकर ने किया।

उच्च शिक्षा विभाग के क्षेत्रीय संचालक डॉ. राजेश पांडे एवं विज्ञान महाविद्यालय दुर्ग के प्राचार्य डॉ. अजय सिंह ने शॉल श्रीफल व पुष्पगुच्छ भेंट कर किया।

विमर्श कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ के शिक्षा जगत के वरिष्ठ अधिकारी, विद्या भारती के कार्यकर्ता, विभिन्न कॉलेज के प्राचार्य एवं प्राध्यापक ,सरस्वती शिशु मंदिर के आचार्यगण एवं समाज के प्रबुद्ध व गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम में विशेष रूप से जुड़ावन सिंह ठाकुरजी ,विवेक सक्सेनाजी, दुर्गेश नंदिनी परिहार, राघवेंद्र मिश्रा, चिरंजीव जैन जी, डॉ. मनोज दानी, श्री सुरेंद्र कौशिक,श्री दीपक सोनी , श्री दीपक यादव , श्री शत्रुघ्न देवांगन, श्री हरिश्चंद्र साहू , श्री पूनम चंद जैन सहित नगर के लगभग 300 प्रबुद्ध जन उपस्थित थे।

मंच संचालन डॉ. ज्योति धारकर तथा धन्यवाद ज्ञापन विद्वत परिषद के दुर्ग जिला प्रमुख एवं उतई महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. पंकज सोनी ने किया।

साधारण सभाबैठक, श्री अग्रसेन भवन न्यू खुर्सीपार भिलाई में सम्पन्न

विद्याभारती मध्यक्षेत्र की साधारण सभा के उद्घाटन सत्र में अखिल भारतीय उपाध्यक्ष अवनीश भटनागर ने कहा कि हम शिक्षा के साथ संस्कार,सांस्कृतिक वातावरण,आधारभूत विषय,पंचकोशात्मक विकास,समग्र विकास की अवधारणा से हम एक अनुशासित विद्यार्थी का निर्माण करतें है,क्षेत्रीय साधारण सभा का शुभारंभ अखिल भारतीय अध्यक्ष डॉ रविन्द्र

कान्हेरे,क्षेत्रीय संगठन मंत्री अखिलेश मिश्रा,अध्यक्ष विवेक शेंडेय,सचिव जितेन्द्र परिहार ने दीप प्रज्वलित कर किया ,दो दिनों तक मध्य क्षेत्र के कार्यकर्ताओं ने सरस्वती शिशु मंदिर के सर्वांगीण विकास की योजना बैठक में बनाई और समापन दिनांक 06 जुलाई रविवार को दोपहर 04 बजे हुआ इस साधारण सभा बैठक में चार प्रांतों के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

सरस्वती शिशु मंदिर देवेन्द्र नगर में 10 जुलाई 2025 को गुरु पूर्णिमा का उत्सव मनाया गया। दीप प्रज्ज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री सूर्यकांत राठौड जी , मुख्यवक्ता श्री विवेक सक्सेना जी , अतिथियों में श्री बद्रीनाथ केसरवानी जी ,श्री मोहन पावर जी,

डा अशोक त्रिपाठी जी , श्री संजय जोशी जी, श्री विजय पटेल जी , श्री रामकुमार वर्मा जी , श्री उदय रावले जी , श्री राजेश अग्रवाल जी , प्राचार्य श्रीमती अमरजीत कौर आचार्य बंधु - भगिनी , भैया-बहन उपस्थित रहे। सभी दीदी-आचार्यों का सम्मान किया गया।भैय्या- बहनों के द्वारा रंगमंचीय कार्यक्रम हुआ। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

शिक्षक, आचार्य और गुरु - ये तीनों शब्द भले ही अक्सर एक-दूसरे के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, लेकिन इन तीनों की भूमिका, महत्व और स्तर में गहरा अंतर होता है।

शिक्षक

शिक्षक वह व्यक्ति होता है जो किसी विषय का ज्ञान देता है।

वह पढ़ाता है, जानकारी देता है, पाठ्यक्रम समझाता है।

शैक्षणिक ज्ञान का संप्रेषण करता है।

विद्यार्थी को परीक्षा में सफल बनाने पर केंद्रित होता है।

उसका कार्य सीमित होता है

आचार्य

आचार्य वह होता है जो न केवल शिक्षा देता है, बल्कि स्वयं आचरण करके भी सिखाता है।

यह शिक्षक से ऊपर का स्तर है। आचार्य अपने जीवन से शिक्षण करता है।

आचार (व्यवहार) और विचार से प्रेरणा देता है।

नैतिकता, अनुशासन और आदर्श जीवन शैली सिखाता है।

''जो स्वयं आचरण करता है, वही आचार्य होता है।''

जो व्यक्ति वेद पढ़ाता ही नहीं, बल्कि उसका पालन भी करता है ङ्क वह आचार्य है।

गुरु

गुरु वह होता है जो अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाए — ''गु'' मतलब अंधकार (अज्ञान), ''रु'' मतलब प्रकाश (ज्ञान)।

गुरु न केवल शिक्षित करता है, बल्कि जीवन का मार्गदर्शन करता है, आत्मिक और आध्यात्मिक विकास करवाता है।

वह शिष्य के जीवन को रूपांतरित कर देता है।

गुरु ज्ञान के साथ-साथ दृष्टिकोण, सोच, और आत्मचिंतन देना सिखाता है।

गुरु शिष्य के जीवन में मार्गदर्शक, प्रेरणा स्रोत और आदर्श होता है।

विभिन्न वर्गों में डॉ. देवनारायण साहु जी द्वारा भारतीय मनोविज्ञान विषय -

भारतीय शिक्षा प्रणाली एक गहन दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसमें मनुष्य के समग्र विकास को लक्ष्य माना गया है। इस दृष्टिकोण में मनोविज्ञान, ज्ञानेन्द्रियाँ (ज्ञान प्राप्त करने वाले अंग), कर्मेन्द्रियाँ (कर्म करने वाले अंग), अन्त:करण (आन्तरिक मनोवृत्तियाँ) तथा बाह्यकरण साधन (बाहरी क्रियात्मक साधन) का विशेष महत्त्व है।

भारतीय शिक्षा में मनोविज्ञान का स्थान=

भारतीय शिक्षा पद्धति का आधार आत्मा, चित्त, बुद्धि, अहंकार और मन जैसे तत्वों की समझ पर आधारित है। यहाँ

मनोविज्ञान का उद्देश्य मात्र मानसिक रोगों का उपचार नहीं, बल्कि आत्मा की शुद्धि और मोक्ष की प्राप्ति के साधन के रूप में देखा जाता है।

मानव स्वभाव की समझ- भारतीय मनोविज्ञान, मानव को केवल भौतिक दृष्टि से नहीं, बल्कि आध्यात्मिक दृष्टि से भी देखता है।

योग एवं ध्यान- यह मानसिक विकास, अनुशासन और चित्त की एकाग्रता के लिए अत्यंत आवश्यक माने जाते हैं।

संस्कारों की शिक्षा- भारतीय शिक्षा में मन और बुद्धि के संस्कार अत्यंत महत्त्वपूर्ण माने गए हैं, जिससे व्यक्ति धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की ओर अग्रसर हो सके।

ज्ञानेन्द्रियाँ

ज्ञानेन्द्रियाँ वे इन्द्रियाँ हैं जिनके माध्यम से मनुष्य ज्ञान प्राप्त करता है। इन्हें पाँच भागों में विभाजित किया गया है-

1. नेत्र – दृष्टि (देखना)
2. श्रवण –श्रवण (सुनना)
3. घ्राण – गंध (सूंघना)
4. रसना – स्वाद (चखना)
5. स्पर्शन – स्पर्श (छूना)

शिक्षा में भूमिका–

इन इन्द्रियों के माध्यम से ही विद्यार्थी ज्ञान अर्जन करता है। भारतीय शिक्षा में इन इन्द्रियों का संयम और सदुपयोग आवश्यक माना गया है ताकि शिक्षा प्रभावी रूप से आत्मसात की जा सके।

कर्मेन्द्रिया

कर्मेन्द्रियाँ वे हैं जिनसे मनुष्य कर्म करता है। ये भी पाँच मानी गई हैं-

1. हस्त – हाथ (कर्म करना)
2. पाद – पैर (चलना)
3. वाक् – वाणी (बोलना)
4. उपस्थ – जनन (संतानोत्पत्ति)
5. पायू – विसर्जन (त्याग करना)

शिक्षा में भूमिका–

भारतीय शिक्षा पद्धति कर्मेन्द्रियों के संयम और शुद्धता पर बल देती है। 'योग: कर्मसु कौशलम्% (गीता) के अनुसार, कुशलता पूर्वक कर्म करना ही योग है, और यह शिक्षण का मूल है।

अन्त:करण साधन

अन्त:करण वह सूक्ष्म तंत्र है जिससे आत्मा कार्य करती है। इसे चार भागों में बाँटा गया है–

1. मन – संकल्प–विकल्प करता है
2. बुद्धि – निर्णय करती है
3. चित्त – स्मृति (संग्रह) करता है
4. अहंकार – 'मैं' की भावना

शिक्षा में भूमिका–

भारतीय शिक्षा में अन्त:करण की शुद्धता अत्यावश्यक मानी गई है। आत्मज्ञान, विवेक, और सच्चे निर्णय की क्षमता तभी विकसित होती है जब अन्त:करण शुद्ध और स्थिर हो।

बाह्यकरण साधन

बाह्यकरण साधनों में वे सभी उपकरण और साधन आते हैं जिनका प्रयोग शारीरिक या बाह्य रूप से शिक्षा ग्रहण करने के लिए होता है, जैसे – शारीरिक अभ्यास, आचार्य (गुरु), शास्त्र, शिक्षण सामग्री, आश्रम व्यवस्था आदि।

शिक्षा में भूमिका–

बाह्य साधन शिक्षा प्राप्ति के वाहक हैं, परंतु उनका उद्देश्य केवल बाहरी ज्ञान देना नहीं, बल्कि आन्तरिक चेतना का विकास करना है। गुरु और शास्त्र इस दिशा में मार्गदर्शक होते हैं।

भारतीय शिक्षा में मनोविज्ञान, ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ, अन्त:करण तथा बाह्यकरण साधनों को समग्र रूप से एकीकृत कर व्यक्ति के बहुआयामी विकास की कल्पना की गई है। यह शिक्षा केवल बौद्धिक नहीं, बल्कि नैतिक, मानसिक, और आध्यात्मिक विकास का मार्ग प्रशस्त करती है।

द्वारा **अमरजीत कौर**
प्राचार्य, स.शि.मं.
देवेन्द्र नगर रायपुर

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

वार्षिक गीत, सत्र - 2025-26

(प्राथमिक कक्षाओं के लिए)

भारत माँ के चरण कमल की, हम नन्हीं सी धूल हैं।
अलग-अलग है रूप-रंग और, भाषाओं के फूल हैं।।

1. श्रेष्ठजनों का आदर उर में, सेवा और समर्पण है।
अतिथि देवो भव सा वन्दन, प्रेम भाव का अर्पण है।
छोटे-छोटे बच्चे हैं हम, हिमगिरि के समतुल्य हैं।
अलग-अलग है रूप-रंग और, भाषाओँ के फूल हैं।।

2. देश धर्म की रक्षा के हित, हँसकर हम लड़ जायेंगे।
गुरुगोविन्द के बच्चे बनकर, चाहे हम मिट जायेंगे।
भारत की जयकार करेंगे, चाहे जितने शूल हैं।
अलग-अलग है रूप-रंग और, भाषाओं के फूल हैं।।

3. मिलजुल कर सब काम करेंगे, संगठना की रीति यही।
ऊँच-नीच का भेद मिटाएँ, समरसता की नीति यही।
सकल विश्व में नाम करेंगे, भारत भू के मूल हैं।
अलग-अलग हैं रूप-रंग और, भाषाओं के फूल हैं।।

।। भारत माता की जय।।

मेधावी छात्र परीक्षा 2025

सरस्वती शिक्षा संस्थान छ.ग. रायपुर द्वारा 9 मई 2025 को मेधावी छात्र परीक्षा आयोजित की गई। छ.ग. प्रांत में 39 केन्द्रों में परीक्षा सम्पन्न हुई।

मेधावी छात्र परीक्षा 2025 की सामान्य सांख्यिकी- (नगरीय विद्यालय)

कक्षा	कुल उपस्थिति	परीक्षाफल						
		प्रावीण्य	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	योग	प्रतिशत	अनुत्तीर्ण
तृतीय	402	135	206	49	09	399	99.25	03
वतुर्थ	354	38	208	76	21	343	96.83	11
पचम्	367	22	146	135	45	348	94.82	19
षष्ठ	294	36	169	76	12	293	99.65	1
सप्तम	299	07	103	118	47	275	91.97	24
अष्टम	294	15	92	136	36	279	94.89	15
नवम	256	01	34	100	89	224	87.05	32
एकादश	176	03	27	65	69	164	93.18	12
सर्वयोग	2442	257	985	755	328	2325		117
प्रतिशत		10.52	40.33	30.91	13.43	95.20	95.20प्रतिशत	4.79

कक्षा- तृतीय (पूर्णांक- 100)

क्र.	भैया/बहिन का नाम	विद्यालय का नाम	स्थान प्राप्तांक	प्रतिशत
1.	एकलव्य साहू	अभनपुर	प्रथम	98
2.	निशिता साहू	बाराद्वार	द्वितीय	96
3.	विद्याश्री तिवारी	वि.म. कोरबा	द्वितीय	96
4.	बजरंग सानी	वि.म. कोरबा	द्वितीय	96
5	आयुष कुमार यादव	पत्थलगांव	द्वितीय	96
6.	लिगंराज साहू	देवभोग	तृतीय	95

कक्षा- चतुर्थ (पूर्णांक- 100)

क्र.	भैय्या / बहिन का नाम	विद्यालय का नाम	स्थान	प्राप्तांक / प्रतिशत
1.	कृष वासवानी	खैरागढ़	प्रथम	93
2.	ओम यादव	कोनी	द्वितीय	92
3.	लोकेश साहू	वि.म. कोरबा	द्वितीय	92
4.	प्रणव सिंह राजपुत	गडई	तृतीय	90
5.	डालिमा दास	बसना	तृतीय	90
6	लक्ष्यराव जाधव	राजिम	तृतीय	90
7.	कुणाल साहू	राजिम	तृतीय	90

कक्षा- पंचम् (पूर्णांक-100)

क्र.	भैया/बहिन का नाम	विद्यालय का नाम	स्थान	प्राप्तांक / प्रतिशत
1.	मोक्ष श्रीवास	बस स्टैण्ड कोरबा	प्रथम	93
2.	लक्ष्य देवागंन	खरोरा	द्वितीय	92
3.	लक्की कुमार साहू	राजिम	द्वितीय	92
4.	वेदिका राज	वि.म. कोरबा	तृतीय	91

कक्षा- षष्ठ (पूर्णांक- 100)

क्र.	भैया/बहिन का नाम	विद्यालय का नाम	स्थान	प्राप्तांक
1.	ओजस कुमार	राजिम	प्रथम	96
2	आदित्य प्रधान	बसना	द्वितीय	93
3.	रंजूपाल	बलरामपुर	तृतीय	92
4.	गौरीशंकर पाल	बलरामपुर	तृतीय	92

कक्षा- सप्तम् (पूर्णांक- 100)

क.	भैया/बहिन का नाम	विद्यालय का नाम	स्थान	प्राप्तांक
1.	खुशी	बसना	प्रथम	87
2.	उमेश्वरी साहू	राजिम	द्वितीय	85
3.	दीप्ति सिह	अकलतरा	तृतीय	84

कक्षा- अष्टम (पूर्णांक- 100)

क्र.	भैया/बहिन का नाम	विद्यालय का नाम	स्थान	प्राप्तांक / प्रतिशत
1.	आस्था भैना	बाराद्वार	प्रथम	92
2.	सुप्रिया नाग	चारामा	द्वितीय	91
3	माही देवांगन	बलौदा	द्वितीय	91
4.	मयंक नायक	बरमकेला	द्वितीय	89
5.	राशि यादव	बलौदा	तृतीय	91

कक्षा- नवम् (पूर्णांक- 100)

क्र.	भैया/बहिन का नाम	विद्यालय का नाम	स्थान	प्राप्तांक / प्रतिशत
1.	पुष्पाजंलि देवांगन	शिवरीनारायण	प्रथम	83

कक्षा -दशम् (पूर्णांक- 600) बोर्ड की प्रावीण्य सूची में प्राप्त स्थान

क्र.	भैया/बहिन का नाम	विद्यालय का नाम	स्थान	प्राप्तांक प्रतिशत
1	प्रवीण प्रजापति	चन्द्रपुर	चतुर्थ	592/600
2.	कोमल यादव	चन्द्रपुर	षष्ठ	590/600
3.	गगन सिंह	लोरमी	नवम्	587/600
4.	आदित्य प्रताप सिंह	सेक्टर 4 भिलाई	दशम्	586/600
5.	शुभम देवागंन	चन्द्रपुर	दशम्	586/600

कक्षा- एकादश (पूर्णांक- 100)

क्र.	भैया/बहिन का नाम	विद्यालय का नाम	स्थान	प्राप्तांक / प्रतिशत
1.	गार्गी महंत	पत्थलगांव	प्रथम	93
2.	दिपांशु राम	कुनकुरी	द्वितीय	87
3.	परमिला यादव	कुनकुरी	तृतीय	81

ग्राम भारती

मेधावी छात्र परीक्षा 2025 की सामान्य सांख्यिकी-

कक्षा	कुल उपस्थिति	परीक्षाफल						
		प्रावीण्य	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	योग	प्रतिशत	अनुत्तीर्ण
तृतीय	295	46	154	62	22	284	96.27	11
चतुर्थ	311	16	133	105	39	293	94.21	18
पंचम्	292	13	95	111	56	275	94.17	17
षष्ठ	217	12	122	59	20	213	98.15	4
सप्तम	206	03	50	92	49	194	94.17	12
अष्टम	181	07	72	67	29	175	96.68	6
नवम	39	–	09	14	11	34	87.17	5
एकादश	15	–	01	06	06	13	86.66	2
सर्वयोग	1556	97	636	516	232	1481		75
प्रतिशत		6.2	40.87	33.09	14.91	95.17		4.82

कक्षा- तृतीय (पूर्णांक- 100)

क्र.	भैया/बहिन का नाम	विद्यालय का नाम	स्थान	प्राप्तांक / प्रतिशत
1.	हेमांशी पटेल	तोलगे	प्रथम	94
2.	आरूषि	सारंगपुर	द्वितीय	92
3.	प्रतीक साहू	खिसोरा	द्वितीय	92
4.	डिम्पल साहू	पवनी	तृतीय	91
5.	पुरब	गैंदाटोला	तृतीय	91
6.	सेजल साहू	कुम्ही	तृतीय	91

कक्षा- चतुर्थ (पूर्णांक- 100)

क्र.	भैया/बहिन का नाम	विद्यालय का नाम	स्थान	प्राप्तांक / प्रतिशत
1.	रूद्रास साहू	मंदरौद	प्रथम	88
2.	लोकेश सिन्हा	मंदरौद	द्वितीय	87
3.	जागृति	खिसोरा	तृतीय	86

कक्षा- पंचम् (पूर्णांक- 100)

क्र.	भैया/बहिन का नाम	विद्यालय का नाम	स्थान	प्राप्तांक / प्रतिशत
1.	मयंक कुमार सोनभद्र	सुंदनी	प्रथम	95
2.	भावेश कुमार यादव	हथौद	द्वितीय	90
3.	मुक्ति किरण	झलमला	तृतीय	85

कक्षा- षष्ठ (पूर्णांक- 100)

क्र.	भैया/बहिन का नाम	विद्यालय का नाम	स्थान	प्राप्तांक
1.	अदिति बरगाह	नगोई	प्रथम	93
2.	आकांक्षा	साकरा	द्वितीय	89
3.	यशराज साहू	बासीन	तृतीय	88

कक्षा- सप्तम (पूर्णांक- 100)

क्र.	भैया/बहिन का नाम	विद्यालय का नाम	स्थान	प्राप्तांक
1.	दिपांशु वर्मा	बैतलपुर	प्रथम	87
2.	देवराज	बोडरा	द्वितीय	81
3.	हर्षवर्धन प्रधान	साकरा	तृतीय	80

कक्षा- अष्टम (पूर्णांक- 100)

क्र.	भैया/बहिन का नाम	विद्यालय का नाम	स्थान	प्राप्तांक / प्रतिशत
1.	खुशी कौशिक	भैसमा	प्रथम	91
2.	डालिनी साहू	कलंगपुर	प्रथम	91
3.	संत महेश्वरी	सिलहाटी	द्वितीय	82
4	नवनिता साहू	बासीन	द्वितीय	82
5.	लावन्या	जगन्नाथपुर	तृतीय	80
6.	शिवा साहू	पाण्डातराई	तृतीय	80

कक्षा दशम् (पूर्णांक- 600) बोर्ड की प्रावीण्य सूची में प्राप्त स्थान

क्र.	भैया/बहिन का नाम	विद्यालय का नाम	स्थान	प्राप्तांक प्रतिशत
1	जयेन्द्र जायसवाल	पाण्डातराई	चतुर्थ	592/600

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक विवेक सक्सेना सचिव सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ रायपुर आयुर्वेदिक कालेज के पीछे 492010 छत्तीसगढ़ द्वारा प्रकाशित एवं स्वास्तिक प्रिंटरी हनुमान मंदिर रोड, पवार सभा भवन के पास, न्यू चंगोराभाठा, रायपुर मो. - 9826446695 से मुद्रित सरस्वती शिक्षा संस्थान रायपुर से प्रकाशित, संपादक - श्री उदय रावले, जुलाई 2025, दूरभाष - 0771-2262770

विविध कार्यक्रम

सरस्वती ग्राम शिक्षा समिति दुर्ग, नवीन आचार्य प्रशिक्षण वर्ग।

प्रांतीय आचार्य सामान्य प्रशिक्षण वर्ग अकलतरा में डॉ. देवनारायण साहू (संगठन मंत्री छ.ग.)

गुरुपूर्णिमा उत्सव सरस्वती शिशु मंदिर देवेन्द्र नगर रायपुर

शपथ ग्रहण समारोह सरस्वती शिशु मंदिर गरियाबंद।

प्रांतीय शिशु वाटिका आचार्य प्रशिक्षण वर्ग अकलतरा।

कांवड़ यात्रा सरस्वती शिशु मंदिर नैला।

गुरु पूर्णिमा उत्सव ग्रामभारती विद्यालय तरीघाट (दुर्ग)।

विविध कार्यक्रम

मा. रमन डेका महामहिम राज्यपाल छ.ग.द्वारा, स.शिक्षा संस्थान के हाई स्कूल प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त भैय्या-बहिनों का सम्मान समारोह।

विद्या भारती मध्यक्षेत्र साधारण सभा न्यू खुर्सीपार, भिलाई (छ.ग.) डॉ. रवीन्द्र कान्हेरे (अध्यक्ष विद्या भारती अ.भा.) मा. अवनीश भटनागर (उपाध्यक्ष विद्या भारती अ.भा.) मा. अखिलेख मिश्र (संगठन मंत्री मध्यक्षेत्र), मा. जितेन्द्र परिहार (मंत्री मध्यक्षेत्र), मा. विवेक शेण्डेय (अध्यक्ष मध्यक्षेत्र)

प्रांतीय आचार्य सामान्य प्रशिक्षण वर्ग 2025 अकलतरा, मा. श्रीराम आरावकर अ.भा. संगठन मंत्री विद्या भारती, मा. देवनारायण साहू संगठन मंत्री छत्तीसगढ़।

प्रति,

____

____

____

पिन. | | | | | | |

प्रेषक:
सरस्वती शिक्षा संस्थान
आयुर्वेदिक कॉलेज के पीछे, रोहिणीपुरम,
रायपुर (छ.ग.) पिन- 492 010 फोन - 0771-2262770

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक विवेक सक्सेना सचिव सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ रायपुर आयुर्वेदिक कालेज के पीछे 492010 छत्तीसगढ़ द्वारा प्रकाशित एवं स्वास्तिक प्रिंटरी हनुमान मंदिर रोड, पवार सभा भवन के पास, न्यू चंगोराभाठा, रायपुर मो. - 9826446695 से मुद्रित सरस्वती शिक्षा संस्थान रायपुर से प्रकाशित, संपादक - श्री उदय रावले, जुलाई 2025, दूरभाष - 0771-2262770